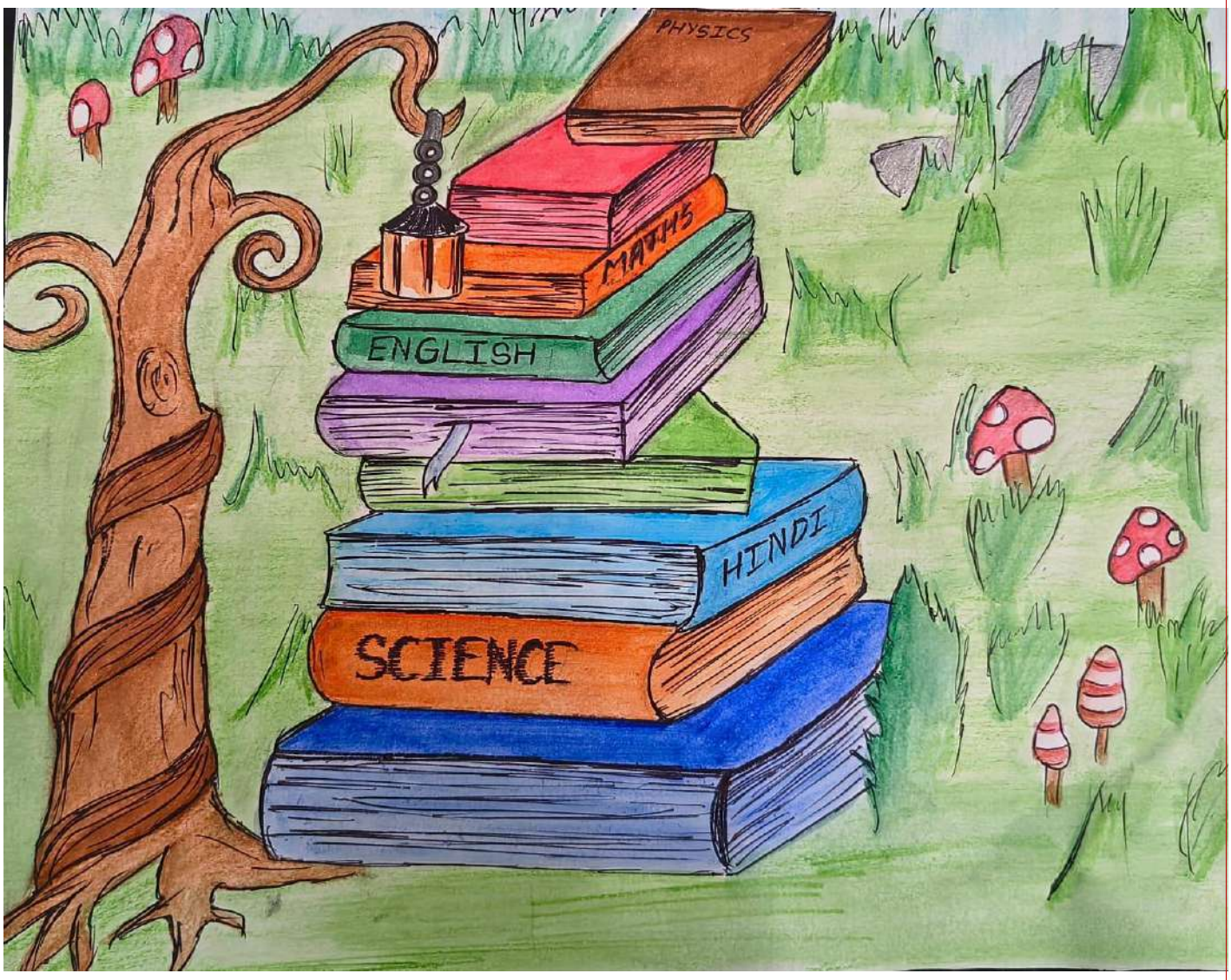
Prerna

VIDYALAYA PATRIKA

Annual Magazine:2025-26



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक. 2 वायुसेना स्थल तेजपुर

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO. 2 AFS TEZPUR

VIDYALAYA PATRIKA '**PRERNA**' 2025-26

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO.2 AFS TEZPUR GUWAHATI REGION

CHIEF PATRON

SH. C.S. AZAD
DC, KVS RO GUWAHATI

OUR GUIDE

SH. RAM KUMAR PANIGRAHI
AC, KVS RO GUWAHATI

SH. NARESH KUMAR
AC, KVS RO GUWAHATI

CHIEF ADVISOR
SH. SANJAY SARKAR, PRINCIPAL
PM SHRI KV NO.2 AFS TEZPUR

BOARD OF EDITORS
MR. KAMAL NAYAN SINGH, PGT (HINDI)
MRS. CHAMPABATI SINGHA, TGT (ENGLISH)
MR. NAYAN SINHA, TGT (ENGLISH)
MRS. PUSHP LATA, TGT (HINDI)
MR. PANKAJ TIWARI, TGT(HINDI)
MRS. ZAHIDA BEGUM, PRT

COVER PAGE DESIGNED BY
ARCHANA RANI VIII C

TECHINICAL ASSISTANTS
SH. MRIGEN BARMAN, PGT (CS)
SH. AMIYA BANIA, COMPUTER INSTRUCTOR
MS. DIYA CHAKRABORTY, DEO

MESSAGE FROM THE PRINCIPAL



It gives me great pleasure to present this year's edition of our school magazine, "Prerna", a publication that reflects the vibrant life, creativity, and achievements of our school community. Each page captures the dedication, curiosity, and enthusiasm of our students, who continue to inspire us with their talents both inside and outside the classroom.

This magazine is more than a collection of articles and photographs—it is a celebration of learning, collaboration, and growth. It showcases the hard work of our teachers, the support of our parents, and the commitment of our students to excellence. I am proud of the way our school continues to nurture not only academic success but also character, creativity, and resilience.

We are deeply indebted to the KVS (HQ), the Deputy Commissioner Shri C S Azad, the Assistant Commissioners Shri R K Panigrahi and Shri Naresh Kumar KVS Guwahati Region for extending their timely support and steering this Vidyalaya to a greater height.

I extend my heartfelt appreciation to the editorial team, teachers, and students who have contributed their time and effort to bring this magazine to life. Your creativity and dedication have made this publication truly special.

As you turn these pages, I hope you find inspiration, joy, and pride in the achievements of our school community. May this magazine continue to remind us of our shared journey and motivate us to reach even greater heights in the years ahead.

Warm regards,

Principal
PM SHRI KV 2 AFS TEZPUR

मुख्य-अध्यापक का संदेश



प्रिय विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं सहकर्मी शिक्षकों,

केंद्रीय विद्यालय तेजपुर की वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। मेरा दृढ़ विश्वास है कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है, जो जिज्ञासा, अनुभव और संवाद से समृद्ध होती है। हमारा प्रयास सदैव ऐसा शिक्षण वातावरण बनाना है जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से सोच सके, सृजन कर सके और अपनी क्षमता का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सके।

विद्यालय पत्रिका इसी दर्शन का सुंदर प्रतिबिंब है जो विद्यार्थियों की चिंतनशीलता, रचनात्मकता और भाषा-प्रवीणता को अभिव्यक्त करने का मंच प्रदान करती है। मैं संपादकीय टीम और योगदान देने वाले सभी विद्यार्थियों को धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका सभी के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी।

सादर,
मुख्य-अध्यापक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक. 2 वायुसेना स्थल तेजपुर

संपादक की कलम से...

ज्ञान, मूल्य और सृजन—इन तीनों का समन्वय ही शिक्षा को पूर्णता प्रदान करता है। केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2, एएफएस तेजपुर की वार्षिक विद्यालय पत्रिका 'प्रेरणा' का यह नया अंक इसी समन्वय की सहज अभिव्यक्ति है। हमारे शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं की कल्पनाशीलता, उनके विचारों की उड़ान और अभिव्यक्ति की क्षमता इस वर्ष प्राप्त विविध रचनाओं में सुंदर रूप से प्रतिफलित हुई है।

असम की सुरम्य भूमि, वायुसेना स्थल की अनुशासित एवं प्रेरक वातावरण और विद्यालय के समर्पित शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने ज्ञान के साथ जीवन मूल्यों को भी आत्मसात किया है। इस पत्रिका में संकलित कविताएँ, लेख, चित्रकला और सृजनात्मक गतिविधियों से जुड़े अन्य आयाम न केवल विद्यार्थियों के आंतरिक संसार की झलक प्रस्तुत करते हैं, बल्कि उनके उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं को भी रेखांकित करते हैं।

हमारे विद्यालय परिवार का हर सदस्य—शिक्षक, छात्र, अभिभावक तथा सहयोगी कर्मचारी—इस सृजन-यात्रा का महत्त्वपूर्ण भागीदार है। उनकी निरंतर ऊर्जा, सहयोग और सकारात्मक दृष्टिकोण ने 'प्रेरणा' को सचमुच प्रेरणा का स्रोत बनाया है।

मैं सर्वप्रथम हमारे प्राचार्य श्री संजय सरकार जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिनकी प्रेरणा से यह ' प्रेरणा' संभव हुई है। उन सभी विद्यार्थियों को विशेष बधाई देता हूँ, जिनकी प्रतिभा इस अंक के माध्यम से पाठकों तक पहुँच रही है। साथ ही उन शिक्षक साथियों का हृदय से आभार, जिन्होंने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए इस पत्रिका के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आशा है कि 'प्रेरणा' का यह अंक पाठकों के मन में नवीन विचारों की ज्योति जलाएगा और प्रत्येक को अपनी क्षमता का सर्वोत्तम रूप प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करेगा।

कमल नयन सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक – हिंदी

हमारे बारे में

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, वायु सेना स्थल, तेजपुर की स्थापना वर्ष 1978 में हुई थी। यह असम राज्य के सोनितपुर जनपद में स्थित ऐतिहासिक नगर तेजपुर से लगभग 15 किलोमीटर उत्तर दिशा में वायु सेना स्थल, सलोनीबारी में अवस्थित है। तेजपुर ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर बसा एक प्राचीन एवं सांस्कृतिक वैभव से सम्पन्न नगर है, जो गुवाहाटी से लगभग 190 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

विद्यालय रक्षा क्षेत्र के अंतर्गत संचालित है। यहाँ कक्षा एक से बारहवीं तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। प्राथमिक स्तर पर तीन वर्ग, कक्षा छठी से दसवीं तक चार वर्ग तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, वाणिज्य एवं मानविकी संकायों की शिक्षा उपलब्ध है। वर्तमान में विद्यालय परिवार में लगभग 1500 विद्यार्थी एवं 65 समर्पित कर्मचारी सम्मिलित हैं।

विद्यालय में आधुनिक प्रयोगशालाएँ, समसामयिक तकनीक से सुसज्जित कक्षाएँ, इंटरेक्टिव पैनल, प्रोजेक्टर तथा समृद्ध पुस्तकालय विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन को रोचक एवं प्रभावी बना रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन के लिए विद्यालय सतत प्रयासरत है, जिसमें पीएम श्री योजना का विशेष योगदान प्राप्त हो रहा है। विद्यालय का परम ध्येय ऐसे शिक्षार्थियों का निर्माण करना है जो राष्ट्र के प्रति समर्पित, उत्तरदायी एवं जागरूक नागरिक बनकर देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकें।



ABOUT US

PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 2, Air Force Station, Tezpur, was established in the year 1978. It is located at Air Force Station, Salonibari, about 15 kilometres north of the historic town of Tezpur in the Sonitpur district of Assam. Tezpur, situated on the bank of the river Brahmaputra, is an ancient town rich in cultural heritage and lies approximately 190 kilometres from Guwahati.

The school functions under the Defence Sector. Education is imparted from Class I to Class XII. At the primary level, there are three sections per class; from Classes VI to X, there are four sections per class; and at the senior secondary level, education is offered in Science, Commerce, and Humanities streams.

At present, the school family comprises about 1,500 students and 65 dedicated staff members. The school is equipped with modern laboratories, technologically advanced classrooms with interactive panels and projectors, and a well-stocked library that make the teaching-learning process engaging and effective.

The school is continuously striving for the successful implementation of the National Education Policy (NEP) 2020, with significant support from the PM SHRI scheme. The ultimate aim of the school is to nurture learners who are dedicated, responsible, and aware citizens, capable of contributing meaningfully to the progress of the nation.



Staff List 2025-26

SL NO	NAME	DESIGNATION
1	SANJAY SARKAR	PRINCIPAL
2	KAMAL NAYAN SINGH	PGT HINDI
3	RAJESH KUMAR	PGT MATHS
4	INAYAT ALI	PGT HISTORY
5	DR. AMITA MATHEW	PGT BIOLOGY
6	SUSHILA YADAV	PGT COMMERCE
7	SHREYA SHREE	PGT PHYSICS
8	RAHUL	PGT ECONOMICS
9	OM PRAKASH YADAV	PGT GEOGRAPHY
10	LAKHESWARI MECH	TGT SST
11	DEEPA DEO BARMAN	TGT SST
12	PINKI KUMARI	TGT SCIENCE
13	CHMPABATI SINGHA	TGT ENGLISH
14	NAYAN SINHA	TGT ENGLISH
15	ABHISHEK SINGH	TGT WE
16	IZHAR ALAM	TGT SCIENCE
17	MANISHA	TGT HINDI
18	PUSHP LATA	TGT HINDI
19	NEETU MUNJAL	TGT HINDI
20	RAGHAVENDRA PANDEY	TGT MATHS
21	SAURABH KUMAR	TGT SCIENCE
22	VIPUL KUMAR	TGT SST
23	RATUL NATH	TGT SKT
24	NISHA RANI DAS	TGT PHE
25	PANKAJ KUMAR TIWARI	TGT HINDI
26	POONAM RANI	TGT MATHS
27	MAMTA	TGT MATHS
28	SUMIT KUMAR MEENA	HM
29	RUMKI DEV	PRT
30	ZAHIDA BEGUM	PRT
31	RAJENDRA PRASAD	PRT
32	ANU PANDIT	PRT
33	RAGHUWAR DAYAL RAWAL	PRT MUSIC
34	LAKSHAY YADAV	PRT

SL NO	NAME	DESIGNATION
35	POOJA SINGH	PRT
36	SHAILENDRA	PRT
37	SHIVANI VARMA	PRT
38	TAMANNA	PRT
39	VAISHALI GUPTA	PRT
40	VIBHA SHARMA	PRT
41	NEHA	PRT
42	PRASUN KUMAR SARKAR	PRT
43	PRADIP KUMAR DAS	SSA
44	MADAN KHANAL	SUB STAFF
45	SANGITA LAMA	PGT POL.SCIENCE
46	DIMPLY BONIA	PGT ENGLISH
47	MRIGEN BARMAN	PGT CS
48	YASHIKA	PGT CHEMISTRY
49	REKHA RANI	TGT HINDI
50	ANJALI	TGT ENGLISH
51	NIDHI MAURYA	TGT MATHS
52	PARISHMITA HAZARIKA	TGT ASSAMESE
53	NIRMAL PAUL	SPORTS COACH
54	RICHA PALLAVI MINJ	COUNSILOR
55	AMIYA BANIA	SR. COMP INSTRUCTOR
56	JAJATI KONWAR	YOGA INSTRUCTER
57	ARUP HAZARIKA	JR. COMP INSTRUCTOR
58	JAYADRI DAS	SPECIAL EDUCATOR
59	RUNJUN KOCH	TGT ART & CRAFT
60	LALITA BASUMATARY	PRT
61	ANKITA BARUAH	PRT
62	JUNMONI BORAH	PRT
63	BRIJBHAN YADAV	PRT
64	RASHMI REKHA KOCH	PRT
65	SRISTY SAGAR TANTI	NURSE
66	DIYA CHAKRABORTY	DEO

विद्यालय की एक झलक / A GLIMPSE OF THE VIDYALAYA

शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम
Teachers' Training Programs - CPD






तकनीक का प्रयोग
Use of Technology (ICT)




कला प्रदर्शनी / Art Exhibition





स्वतंत्रता दिवस
Independence Day Celebration







एक भारत श्रेष्ठ भारत
Ek Bharat Shreshtha Bharat













बस्तारहित दिवस की गतिविधियां
Bagless Day Activities













अनुक्रमणिका/INDEX

1	मायाबीनी रातिर बुकुत - समय की देह पर उकेरा गया अंतिम स्वर	कमल नयन सिंह	स्ना.शि.- हिन्दी
2	मसूरी की अविस्मरणीय यात्रा (पहाड़ों की गोद में बिताए पांच घंटे)	पंकज कुमार तिवारी	प्र.स्ना.शि. (हिंदी)
3	पर्यावरण की सुरक्षा	इनायत अली	स्ना.शि.-इतिहास
4	शिक्षा और तकनीक	राहुल	स्ना.शि.अर्थशास्त्र
5	कैप्टन विक्रम बत्रा का सर्वोच्च बलिदान	वाहिदा खातून	9-अ
6	मेरे सपनों का भारत	रेनू अग्रवाल	12-ब
7	मेरे जीवन का लक्ष्य: इंजीनियरिंग	सेलेना	4-स
8	कहानी मेले की	वर्षा	7-द
9	योद्धा	आयुषी	11–अ
10	मेहनत का अंजाम	अनन्या सिंह	7-अ
11	आज़ादी की गूँज	श्रृष्टि सिंह	9-अ
12	दादा और मैं	अयांश कुमार	5-अ
13	माँ	अभिक सदाई	5-अ
14	मत बाँटो इंसान को	निखिल	8-स
15	मेरी दादी	अक्षिता कठैत	4-अ
16	हम नन्हे मुन्ने बच्चे हैं	लाइबा परवीन	2 - अ
17	मेरी सहेलियां	तुही उमाशंकर दत्त	4-ब
18	এজাক বৃষ্টি সপোনৰ	জাহিদা বেগম	প্রাথমিক শিক্ষয়িত্রী
19	শ্বহীদ	পৰিস্মীতা হাজৰিকা	টী. জী. টী অসমীয়া
20	সময়	জেচিকা ৰাণী পাটাংগিয়া	IV-C
21	Mental Health and Well-Being	CHAMPABATI SINGHA	TGT ENGLISH
22	Indian Sports	HIMANGSU BORO	IX-B
23	The Story of Icarus	KANISHKA GUPTA	XII-B
24	The Mother Duck and The Little Ducklings	NIKHIL	VIII-C
25	Single - Use Plastic	NAYAN JYOTI SHARMA	XI-B
26	Zubeen Garg Voice of Versality	Pratim Das	VI-C
27	Teamwork When it Matters Most	SRISHTI SINGH	IX-A
28	Sports and We	GEETANJALI KURMI	IX-D

अनुक्रमणिका/INDEX

29	The Qualities of A Person	NIKHIL	VIII- C
30	Celebration of Vande Mataram	KUNDAN SARKAR	VII - A
31	The Undiscovered	RANJOT SINGH	VI-D
32	Don't give up	SHREYA BHATTACHARJEE	V-A
33	A day in my little World	YASHVI NEGI	V-C
34	The Future of India Lies in our Hands	NISHTHA DAS	IX-C
35	That one distraction	ANANYA SINGH	VII-A
36	Zubeen Garg	ARNAV KASHYAP	VI- D
37	My School & My Pride	ANIKA	III-A
38	My 'Maa'- My Pride	ARUSH RAJPUT	II-B
39	The Nature	HIMANI SHARMA	V-B
40	My Maa	TRINABH BARUAH	II- B
41	Maa -"My Shining Star"	GUITARIANA BORAH	II-B
42	Rose Flower	MANVI SINGH	III-B
43	A Poem of Love for My Mother	ISHAAN LONGJAM	VI -A
44	Poem on Conservation of Trees — "Guardians of Green"	ISHAAN LONGJAM	VI -A
45	A Child's Prayer	PRATEEKSHA DEVI	I- C
46	Travel experiance	SAIKRISH DAS.	I -C
47	स्वाभिमानः – आत्मसम्मानस्य आधारः	रातुल नाथ	प्र.स्ना.शि. (संस्कृत)
48	संस्कृत श्लोक और उनके अर्थ	रुचि कुमारी	9-द




हिन्दी

मायाबीनी रातिर बुकुत - समय की देह पर उकेरा गया अंतिम स्वर



साल 2006 की वह दोपहर आज भी स्मृतियों में उतनी ही ताज़ा है। गर्मियों की तपन से भरी सड़कें और धीमी-धीमी हवा... और उसी बीच एफएम रेडियो पर अचानक एक गीत बज उठा। पहले तो संगीत ने चौंकाया, कुछ ऐसा था उसमें जो अजनबी भी नहीं लगता था और अपना भी नहीं। और जब आवाज सुनाई दी... तो उस आवाज में जैसे कोई जादू घुला हुआ था। दिल ठहर-सा गया, मन किसी अज्ञात खिड़की से बाहर झांकने लगा।

उस समय इंटरनेट की सुविधाएं आज की तरह सर्वसुलभ नहीं थीं। कई दिनों तक यह रहस्य मेरे भीतर ही घूमता रहा कि आखिर वह आवाज किसकी है? कौन है वह गायक, जो पहली ही सुनवाई में दिल की पकड़ में आ गया?

फिर एक दिन जैसे किसी ने परदा उठा दिया। पता चला — वह आवाज असम के सुपरस्टार गायक ज़ुबिन गर्ग की है।

धीरे-धीरे वह गीत मेरे भीतर घर करता गया। साल के अंत में समाचार चैनलों पर वर्ष का लेखा-जोखा दिखाया जाता था। एनडीटीवी इंडिया पर "साल का सर्वश्रेष्ठ फिल्मी गीत" चुनने की घोषणा हुई तो दर्शकों से अपने पसंदीदा गीत का नाम बताने को कहा गया। कई लोग नए-नए गीतों के नाम भेज रहे थे, लेकिन आठ महीनों से मेरे भीतर बसे उस गीत — "या अली" — की धुन और उस आवाज का जादू मुझे बार-बार वही नाम लिखने के लिए प्रेरित कर रहा था।

यही वह समय था जब मुझे पहली बार एहसास हुआ कि ज़ुबिन गर्ग सिर्फ एक आवाज नहीं हैं — वे एक अनुभव हैं, एक धड़कन, एक गूंज के समान।

साल 2014 में जब मैंने उत्तर लखीमपुर के केंद्रीय विद्यालय में अपनी सेवाएँ आरम्भ कीं, तब इस जादू को नजदीक से समझने का अवसर मिला। विद्यालय में जब भी कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होता — मंच पर चाहे बच्चा हो या शिक्षक — गीत कहीं न कहीं ज़ुबिन का ही होता।

उस समय लखीमपुर को जोड़ने वाली रेल सेवाएँ अभी शुरू नहीं हुई थीं। हम सभी शिक्षक गुवाहाटी, डिब्रूगढ़, दुलियाजान कहीं भी जाने के लिए बसों पर ही निर्भर थे। और उन बसों के प्लेलिस्ट... बस पूछिए मत!

हर बस में, हर सफ़र में, हर मोड़ पर ज़ुबिन ही ज़ुबिन।

धीरे-धीरे मैंने समझना शुरू किया कि असम में ज़ुबिन गर्ग को सुनना सिर्फ संगीत सुनना नहीं है — बल्कि वह सांस लेने जैसा है।

यह दीवानगी अद्भुत थी।

शहर का पढ़ा-लिखा युवक, विश्वविद्यालय का प्रोफेसर, चाय बागानों में काम करने वाले मजदूर, दूरदराज़ गाँव की औरतें — हर कोई ज़ुबिन के गीतों में समान रूप से डूबा हुआ।

मैंने अपने जीवन में कला और संगीत के बदलते दौर देखे थे। परंतु ऐसा पहली बार देखा कि कोई कलाकार वर्गों के बीच की सभी सीमाएँ तोड़ दे और सबको एक ही भाव में बाँध दे।

मुझे तब समझ आया —

ज़ुबिन गर्ग सिर्फ गायक नहीं, असमिया संस्कृति की धड़कन हैं।

उसी दौर में ज़ुबिन की फिल्म ‘मिशन चाइना’ सिनेमाघरों में आयी। मसाला फिल्म होने के बावजूद, गंभीर सिनेमा देखने वाले दर्शक भी इसे उसी गर्व के साथ देखते जैसे किसी पारिवारिक जिम्मेदारी को निभा रहे हों।

लखीमपुर के सिनेमा हॉलों में एक परंपरा थी — कभी-कभी सिर्फ आठ-दस दर्शक होने पर भी फिल्म चलाई जाती थी। इसपर भी कई बार मैं खुद ऐसी फिल्मों के शो में गया जहाँ दस दर्शक भी नहीं होते थे और कई फिल्मों के लिए वो 10 दर्शक भी नसीब होते थे और उस शो को रद्द करना पड़ता था।
लेकिन 'मिशन चाइना' के लिए बोर्ड पर सिर्फ एक शब्द चमकता था — हाउसफुल।
लगता था कि यह किसी कलाकार की फिल्म नहीं, बल्कि किसी घर के बेटे की सफलता का उत्सव है। सिनेमाघर के बाहर भीड़ का भाव यही कहता था, "हम उसे देखने नहीं, उसे अपना प्रेम देने आए हैं।"
फिर मेरा स्थानांतरण दिल्ली हो गया। सात वर्षों का लंबा अंतराल बीता और इस वर्ष मई में मैं फिर असम लौटा। असम बहुत बदल चुका था, शहर नए रंगों में ढल चुके थे, पर एक चीज़ बिल्कुल नहीं बदली थी —
अपने लाडले बेटे ज़ुबिन के प्रति लोगों का प्रेम। वह प्रेम अभी भी उतना ही गहरा, उतना ही मासूम था।
और फिर एक दिन ऐसा आया जिसने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। दोपहर को मेरी पत्नी का फोन आया। उसकी रोती आवाज सुनकर लगा कि किसी अपने के साथ कोई अनहोनी हो गई है। "ज़ुबिन दा... की डेथ हो गई..." बस इतना कहा उन्होंने। दुनिया मेरे चारों ओर मानो एकाएक खाली हो गई। ऐसा लगा जैसे किसी अपने ने हाथ छोड़ दिया हो। जैसे कोई गहरी धड़कन अचानक रुक गई हो। और मुझे तुरंत समझ आ गया, असम अभी अपने इस बेटे को खोने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। अगले कुछ घंटों में जो हुआ... वह शब्दों के लिए बहुत भारी है। पूरा असम, सचमुच पूरा असम- शहर, कस्बे, गांव, चौक, गलियां — सब कुछ थम गया। दुकानें बंद, बाजार शांत, सड़कें सूनी। लोग बड़े-बड़े चौराहों पर जुटने लगे। किसी ने कुछ कहा नहीं — कहना जरूरी भी नहीं था। हर तरफ ज़ुबिन गर्ग की तस्वीरें, बैनर, मोमबत्तियाँ, पुष्प। नामघरों में कीर्तन, मंदिरों में प्रार्थना... महिलाएँ रोते हुए श्रद्धांजलि गीत गा रही थीं। बच्चे, बूढ़े, जवान, सभी हाथ जोड़कर खड़े थे और सबके होठों पर एक ही गीत था —
"मायाबीनी रातिर बुकुत..." मैंने ऐसी एकजुटता, ऐसा प्रेम, ऐसी व्यथा पहले कभी नहीं देखी थी। गुवाहाटी की सड़कें उनके अंतिम दर्शन के इंतजार में ठहर सी गई थीं। जैसे ही ज़ुबिन का पार्थिव शरीर पहुँचा भारी लहर की तरह लाखों लोग उमड़ पड़े। हर कोई बस एक बार...एक आखिरी बार...अपने प्रिय को देख लेना चाहता था। "जय ज़ुबिन दा!" "ज़ुबिन दा अमर रहें!" के नारों से आसमान गूंज उठा। लोग रो रहे थे, पर गर्व भी उतना ही था। यह विदाई नहीं थी — यह एक बेटे का असम की मिट्टी में विलीन होना था। कुछ दिनों बाद मैं सोनापुर में बने ज़ुबिन क्षेत्र पहुँचा। रात के बारह बजे भी वहाँ भीड़ थी। लोग शांति से खड़े थे — जैसे किसी अपने के पास बैठा जाता है, वैसे। वहाँ दीप जलाने की जगह कम पड़ने लगी थी। हर व्यक्ति की आँखों में आँसू थे, लेकिन उन आँसुओं में श्रद्धा थी, अपरिमेय प्रेम था। वहाँ खड़े होकर मुझे लगा कुछ लोग जीवन में नहीं, दिलों में जन्म लेते हैं। और ज़ुबिन गर्ग उन्हीं में से एक हैं। आज भी जब बसों में, गलियों में, घरों में या किसी मंच पर ज़ुबिन का गीत बजता है, तो लगता है वह कहीं गया ही नहीं। वह अभी भी यहीं है — हवा में, मिट्टी में, नदी की लहरों में, लोगों की धड़कनों में। असम ने अपने बेटे को खोया नहीं है। असम ने उसे अमर कर दिया है और शायद यही वजह है कि जब भी "मायाबीनी रातिर बुकुत..." सुनाई देता है — वह गीत नहीं, एक दीपक-सा उजाला फैलाता है।

कमल नयन सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक-हिन्दी

मसूरी की अविस्मरणीय यात्रा (पहाड़ों की गोद में बिताए पांच घंटे)



बात साल 2023 के मई महीने की है। मुझे केंद्रीय विद्यालय के एक साक्षात्कार के लिए देहरादून जाना पड़ा। वहां जाने के बाद पता चला कि यहां से मसूरी 30-32 किलोमीटर के आसपास है। मसूरी के इतना नज़दीक जाकर भी बिना घूमे वहां से लौटना मेरे घुमंतू स्वभाव के विपरीत था। साक्षात्कार के लिए आए हुए अनेक अभ्यर्थियों से मैं साथ चलने के लिए पूछा तो उन्होंने अगले दिन होने वाले साक्षात्कार का हवाला देते हुए वहां जाने से मना कर दिया। फिर क्या था 'एकला चलो रे' के कथन को चरितार्थ करते हुए मैंने अकेले ही जाने का मन बना लिया। जाने से पहले मसूरी से देहरादून लौटने पर ठहरने के लिए ठिकाना ढूंढना जरूरी लगा तो आसपास में ही एक होटल में एक कमरा बुक कर लिया। साथ में पानी की बोतल और एक तौलिया के सिवा मैंने सबकुछ कमरे में रखकर बस स्टैंड की तरफ रवाना हुआ। बस स्टैंड लोगों से खचाखच भरा था। सभी लोग बस के टिकट के लिए लाइन में खड़े थे। मैंने भी लाइन में लगकर टिकट ले लिया और खिड़की वाली सीट पर जा बैठा। मैं तो बस में बैठा-बैठा बस के खुलने का इंतजार कर रहा था लेकिन मेरा मन यात्रा पर निकल पड़ा। मसूरी जैसे जगह पर पहली बार जाना हो रहा था इसलिए मन वृंदावन हो रहा था। इसी चक्कर में बीच-बीच में आसपास बैठे वहां के स्थानीय लोगों से पूछ बैठता - वहां खाने को क्या-क्या मिलता है, ज्यादा महंगा तो नहीं है न, घूमाने वाले टैक्सी कितना किराया लेते हैं। वगैरह-वगैरह तमाम प्रश्नों के उत्तर जानना चाह रहा था। मसूरी जाने और आने का मनसौदा मन ही मन बनाने लगा। मई का महीना था। धूप खिली हुई थी। वातावरण में थोड़ी गर्माहट थी। मैं बिहार का रहने वाला हूं। मेरा घर मैदानी क्षेत्र में था और मैं घूमने पहाड़ी क्षेत्र में गया था। अतः बिहार और वहां के वातावरण में अंतर कर पाना बहुत आसान था। मुझे ऐसा लगा मेरे यहां की गर्मी में और वहां के गर्मी में बहुत ज्यादा फर्क नहीं है। देहरादून के बारे में पहले से जो भी मैं जानता था, वह यह था कि वहां बहुत ठंड रहती है, गर्मियों में भी ठंडी कहीं कहीं देखने को मिल सकती है। लेकिन यहां कुछ नहीं था। यह देखकर और जानकर बड़ा दुख हुआ। किसी स्थानीय से मैंने पूछा क्या अप्रैल और मई महीने में यहां इसी तरह की गर्मी पड़ती है? उसने जवाब दिया- गर्मी तो दिन में ऐसे ही रहती है रात भले ही थोड़ी ठंडी हो जाती है। मुझे लगा हो सकता है ग्लोबल वार्मिंग का असर यहां भी पड़ रहा होगा। गर्मियों की सुहानी सुबह थी। सूरज की तेज किरणें खिड़की से झांक रही थीं। बस जैसे-जैसे ऊंचाई की ओर बढ़ रही थी, सड़क और घुमावदार होते जा रहे थे। हवा में थोड़ी-थोड़ी ठंड घूलने लगी थी। दोनों ओर देवदार और चीड़ के वृक्ष मानो अपने हरे आंचल में हमारा स्वागत कर रहे हों। बस एक जगह रुकी वहां से लगभग 10-12 वर्ष का एक लड़का और एक स्त्री बस में चढ़ी और कुछ देर बाद ही एक स्थानीय वाद्य यंत्र के बजाने का संगीत एवं उसके साथ-साथ एक गाने की "मेरा भोला है भंडारी करे नंदी की सवारी शंभू नाथ रे शंभू नाथ रे.... मैंने बस के अंदर पीछे मुड़कर देखा तो वह लड़का हाथ से बनाया हुआ सारंगी जैसा कोई एक वाद्य यंत्र बजा रहा था एवं साथ में वह गाना भी गा रहा था। जो वातावरण को और ही सुहाना बना रहा था जैसे सोने पर सुहागा। देर बाद देखा कि उस लड़के के साथ चढ़ी महिला बस में बैठे सभी यात्रियों से गाने के बदले में कुछ पैसे मांग रही है। मैंने देखा कि सभी लोग 10-10 रुपए के नोट उसके हाथ पर रखे जा रहे थे। मेरे पास आकर मांगने पर मैं भी 10 का एक नोट उसके हाथ पर रख दिया। कुछ ही देर में हम पहुंच गए थे पहाड़ों की रानी मसूरी में। एक अद्भुत संसार। बस से उतरते ही मैंने स्थानीय लोगों से कम समय में घूमने लायक जगह का जायजा लेने लगा। क्योंकि कल होने वाले साक्षात्कार के लिए मुझे तड़के ही निकलना था। मेरा पूछना था कि लोगों ने धड़ाधड़ तीन-चार नाम बता दिये। जिसमें पहला नाम था कैम्पिटी फाॅल। मेरे साथ सबसे विकट समस्या थी, घूमा कैसे जाय। मैं अकेले था। बहुत सारे लोग ग्रुप में आए थे या अपने परिवार के साथ। वे टैक्सी कर घूमने के लिए निकल पड़े।अकेले टैक्सी करना मेरे बस की बात नहीं थी। थोड़ी ऊंचाई पर चढ़ने पर पता चला कि यहां स्कूटी या बाइक भाड़े पर मिल जाती है। जिसका निर्धारित किराया एवं पहचान पत्र भी देना पड़ता है। मैं बिना समय गंवाए ₹600 में स्कूटी तय कर लिया। मैं निकल पड़ा कैम्पिटी फाॅल। सकरी और घुमावदार रास्ते रोमांच से भरे थे। वैसे जगह पर स्कूटी या बाइक चलाना मेरे लिए आसान तो नहीं था लेकिन वहां गाड़ी चलाने में मुझे मजा आ रहा था। जगह-जगह लिखी चेतावनियां हमें खतरों के प्रति आगाह कर रही थी। एक जगह लिखा था-धीरे चलें,

घर में बच्चे आपका इंतजार कर रहे हैं। मेरा मन एकाएक घर और परिवार की ओर मुड़ गया। तब लगा निहायात अकेले और अनजान जगह पर अपने आप को सुरक्षित रखना कितना महत्त्वपूर्ण एवं जरूरी है। मैंने स्कूटी की स्पीड को लिमिट में रखा और संतुलन बनाकर चला रहा था। रास्ते में अनेकानेक पहाड़ दिखे। अलग-अलग तरह के पहाड़, छोटी-बड़ी, ऊंची-नीची, लंबे-चौड़े। तब लगा इसका नाम पहाड़ों की रानी क्यों है। मैं छोटी क्लास में सामान्य ज्ञान के पुस्तक में पढ़ रखा था। मसूरी को 'पहाड़ों की रानी' कहते हैं लेकिन आज मैं रानी की गोद में था। किसी के बारे में पढ़ना अलग बात है, उसके साथ समय बिताना अलग बात। बीच-बीच में लोगों से वहां पहुंचने के रास्ते के बारे में पूछते हुए अंततः मैं पहुंच गया था कैम्पिटी फाॅल। दूर से ही पानी गिरने की आवाज, पानी गिरने से उठती हुई धुएं की तरह उसकी बूंदों ने हमें बता दिया था कि हम फाॅल के बहुत करीब हैं। नीचे गिरता हुआ दूध सा सफ़ेद पानी उसके चारो ओर उठती फुहारें और बच्चों की किलकारियां सब मिलकर एक स्वर्गीय दृश्य बना रहे थे। मैं नीचे उतरकर झरने के पास गया। पानी के गिरने से बनी फुहार दूर खड़े व्यक्ति को भी अपनी ठंडक पहुंचा रही थी। तन और मन दोनों भीग रहा था। लोगों को नहाते देखा तो मेरा भी मन हुआ कि नहा लूं। बिना नहाए वहां से चले जाना जैसे फ्री में मिल रहे खाने के लिए मिठाई को छोड़कर चले जाना जैसा था। फिर क्या था मेरे पास तो गमछा था ही कूद पड़ा पानी में। वैसा स्वच्छ, निर्मल एवं दूध जैसा सफेद पानी आज से पहले मैंने कभी नहीं देखा था। तब पता चला ऋषि, मुनि , महात्मा एवं संन्यासी क्यों इन पहाड़ों में रहना चाहते हैं। शांति, स्वच्छता और स्वर्गीय आनंद इन्हीं पहाड़ों में ही तो है। नहाते समय सेल्फी लेने की होड़ मची थी। पानी में भी मोबाइल का प्रयोग करने के लिए बहुत सारे उपकरण वहां बिक रहे थे ताकि आपका मोबाइल सुरक्षित रहे। मैंने भी किसी से कहकर एक- दो फोटो क्लिक करवाई। मेरे पास समय कम थे। इसलिए मैं वहां ज्यादा समय नहीं बीता पाया। जल्दी से दूसरे मंजिल की तरफ निकल पड़ा। जाते समय ही LBSNAA(लाल बहादुर शास्त्री नैशनल अकैडमी)दिख पड़ा था। पहले से ही सोच रखा था कि आते समय यहां जरूर घूमूंगा । रास्ते में मुझे कुछ स्कूली बच्चे दिखे। जो इन गर्मी के महीनो में भी स्वेटर पहन रखे थे। एक जगह मैंने स्कूटी रोककर एक छात्र से पूछा- क्या आपको गर्मी नहीं लग रही? तो उसने कहा- सुबह स्कूल आते समय ठंड लगती है सर। अभी भी मुझे स्वेटर पहनने से गर्मी नहीं लग रही। एक छात्र ने बताया कि सर यहां रात में चादर ओढ़ने पड़ते हैं। रात में ठंड अधिक बढ़ जाती है और दिन में तापमान सामान्य रहता है। मुझे ज्यादा लोगों से बातचीत करने की फुर्सत नहीं थी।सो मैं लाल बहादुर शास्त्री नैशनल अकादमी के तरफ निकल पड़ा। एक समय था जब मैं भी लाल बहादुर शास्त्री नैशनल अकैडमी में ट्रेनिंग लेने की सपना देखा करता था। सपने देखना कोई बुरी बात नहीं। सपने देखना चाहिए। किसी ने कहा है- "छलांग तारों के लिए लगाओ, यदि गिरोगे भी तो चांद पर होगे।" सुरक्षा कारणों से मैं अंदर न जा सका। देश के भावी प्रशासनिक अधिकारी यहां प्रशिक्षण लेते हैं। यह स्थान देखकर मन गर्व से भर गया। प्रकृति के गोद में बसा यह स्थल शांत वातावरण एवं अनुशासन की पराकाष्ठा थी।जो वहां के हर कोने में महसूस हो रही थी। दूर-दूर तक फैली हरियाली एवं पहाड़ों की गोद में स्थित यह अकैडमी सच में प्रेरणा की केंद्र थी। अब मुझे कुछ-कुछ भूख लगने लगी थी। उसी समय एक कॉफी हाउस में जाकर गरमा- गरम चाय और समोसे का आनंद लेने लगा। उस कॉफी हाउस से नीचे का नज़ारा बहुत ही खूबसूरत था। वहां से देखने पर लग रहा था- जैसे कोई हरियाली की बड़ी सी थाल परोस रखा है। जिसमें तरह-तरह के आइटम रखे हुए हैं। आसमान में बादल लुका छुपी का खेल खेल रहे थे। कभी सूरज बादलों में छिप जाता तो कभी-कभी वह अपने आधी मुंडी निकाल कर जैसे आंख-मिचौली का खेल खेल रहा हो। माया और छाया का यह खेल अद्भुत था । चाय पीते समय किसी ने बताया देश के बड़े-बड़े सेलिब्रिटीज जैसे अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर आदि ने यहां जमीन ले रखी है और अपने लिए एक घर बना रखा है। और जब महानगरीय व्यवस्था से उब जाते हैं तो यहां शांति की तलाश में कुछ दिन बिताने आते हैं। बस का टाइम हो चुका था। स्कूटी मैंने स्कूटी वाले को दे दी। और बस स्टैंड की तरफ़ निकल पड़ा। उधर से लौटते समय खिड़की से फिर से एक बार इस रानी को आंखों में कैद कर लेने की कोशिश में लग गया। पहाड़ियों से उतरते समय मन में कल होने वाले साक्षात्कार देने का खुमार चढ़ने लगा था, क्योंकि मंजिल तो वही था। लौटते समय यह भी अहसास हुआ कि मंज़िल से कहीं ज्यादा रोमांचक होता है मंज़िल तक का सफर...

पंकज कुमार तिवारी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक – हिंदी

पर्यावरण की सुरक्षा



प्रिय पाठकों, पर्यावरण शब्द का शाब्दिक अर्थ है हमारे आसपास का वातावरण परंतु मेरे हिसाब से पर्यावरण का मतलब काफी बड़ा है क्योंकि यहां प्रत्यक्ष रूप से हर वस्तु फिर चाहे वह सजीव हो या निर्जीव से जुड़ा हुआ है।

पर्यावरण की रक्षा हम भारतीयों का मूल कर्तव्य भी है जो पुरातन काल से चला आ रहा है, हमारे ऋषि-मुनियों ने, हमारे शास्त्रों ने, गुरुकुल की शिक्षाओ में, भगवान के अनेक रूपों में, क्षेत्रीय देवी-देवताओं आदि ने पर्यावरण को सुरक्षा प्रदान करने की बात कही है। मध्य काल में ओद्योगिक क्रांति इंग्लैंड से शुरू कर पूरी दुनिया पर छा गई । और इससे पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है, नई नई तकनीकीओ के अत्यधिक प्रयोग से हमारा पर्यावरण आज पूरी तरह से प्रदूषित हो गया है ।मैं ने खुद देखा है कि कैसे जब मेरे गांव में मोबाइल फोन कम थे तथा गांव में नेटवर्क टावर नहीं थे तो कितने सारे पक्षी जैसे कबूतर, तोता, कौवा, चिड़िया मेरे घर की छतों पर सुबह-सुबह ची ची शुरु कर देते थे और सुबह बड़ी प्यारी हो जाती थी।परंतु आज गांव से यह पक्षी लगभग पूरी तरह से ओझल हो चुके हैं मोबाइल की खतरनाक तरंगे किस तरह से पक्षियों पर अपना असर छोड़ जाती हैं इसके लिए आपको रोबोट 2.0 फिल्म जरूर देखना चाहिए। दुनिया के हर धर्म, पंथ , और संप्रदाय ने पर्यावरण को बचाने की बात अपने अपने धर्म ग्रंथों में कहीं है दुनिया जितनी तेजी से आगे बढ़ेगी उतनी ही तेजी से पर्यावरण खत्म हो जाएगा ।दुनिया के महान देशों ने मिलकर तथा UNO के अनेकों पर्यावरण सम्मेलन और सेमिनार मे बैठकर काफी सारी चर्चाएं पर्यावरण के ऊपर की गई है। परंतु उसका परिणाम लगभग शुन्य हीं रहा है ।क्योंकि हर बार बड़े विकसित देशों ने अपने छोटे देश और विकासशील देश एक दूसरे पर जिम्मेदारी डालते रहें हे। हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पूरी दुनिया में मनाया जाता है ।परंतु क्या आपको लगता है कि 1 दिन से बाकी 364 दिन का कचरा, प्रदूषित हवा और प्रदूषण खत्म हो जाता है । हालांकि कुछ मानव शरीर पर्यावरण को बचाने में प्रयासरत हैं पर और लोगों को भी साथ आना होगा ,कुछ दिन और हे जब हम पर्यावरण के घटकों के बारे में जान सकते हैं जैसे पृथ्वी दिवस, जैव विविधता दिवस ,वन महोत्सव आदि का प्रभाव बहुत ज्यादा नहीं पड़ता है ।सिर्फ सरकारों का दिखावा ही लगता है और यह दिखावा पूरी दुनिया में प्रचलित है।

पर्यावरण का अर्थ पेड़ पौधे लगाकर पूरी दुनिया को जंगल बनाने से नहीं है ना ही जानवरों को घर में पालने से है इसका सीधा सा अर्थ है प्रकृति से उतना ही ग्रहण करें जितना आप वापस लौटा सकते हैं ।आज वन जो लगभग 60 से 80% खराब या फिर खत्म हो चुके है इसके कुछ कारण नीचे लिखे गए हैं- पेड़ पौधों को लगातार कटना ,जानवरों को लगातार मारना, हर प्रकार के प्रदूषण से हो रहे हानियां, सरकारों का निरस्त व्यवहार तथा सबसे महत्वपूर्ण हर मानव का इस समस्या से अनजान होना या फिर अपने आप को अनजान ही दिखाना ।हम सभी मानव यह जानते है कि पृथ्वी के अलावा हमारा और कोई ठिकाना नहीं है ,तो बस हमें हमेशा वही कार्य करने चाहिए जो पर्यावरण को हानि ना पहुंचाएं ।कभी-कभी ऐसा भी लगता है कि दुनिया का विकास जरूरी है या फिर पर्यावरण की सुरक्षा ,जैसे किसी जंगल में से हाईवे का निकलना अगर हाईवे बनेगा तो जंगल को साफ करना पड़ेगा जंगल साफ हुआ तो जानवरों का अधिवास खत्म हो जाएगा फिर वह सब गांव का व शहर पर आक्रमण करेंगे या फिर हाईवे ही ना बने ,फिर विकास कैसे होगा? हालांकि यह एक गंभीर विषय है फिर भी हमें कम से कम पर्यावरण को नुकसान पहुंचाना चाहिए। क्योंकि अगर पर्यावरण बिगड़ गया तो मानव सभ्यता खत्म हो जाएगी। फिर हम सब कुछ हाईवे का क्या करेंगे ।कभी कभी ऐसा भी महसूस होता है कि पर्यावरण की क्षति काफी धीरे-धीरे होती है इसका मानव दिमाग पर प्रभाव नहीं पड़ता। परंतु प्रिय पाठकों, अंटार्टिका से साफ दिखाई देता है कि पर्यावरण की क्षति के कारण ओजोन परत जो हमें सूर्य की किरणों से बचाती है पर धीरे धीरे एक बड़ा छेद हो रहा है, ऐसा माना जाता है कि अगर सूर्य की किरणें धरती पर पड़े बिना किसी व्यवधान के तो यहा पर जीना ही दूभर हो जाएगा और हम सब मर जाएंगे। मैंने कहीं पढ़ा भी है कि पहले एक पेड़ को काटा जाता है, फिर उससे एक कागज बनाया जाता है फिर उस कागज पर पेड़ मत काटो या फिर पेड़ बचाएं लिखा जाता है। जिसका हमें पता ही नहीं है आज भी दुनिया भर के 90 फ़ीसदी लोगों को पर्यावरण की कोई खास परवाह नहीं है, बाकी पांच परसेंट तो थोड़ा

बहुत काम करते हैं उनकी कोई नहीं सुनता है बाकी अंतिम पांच परसेंट के पास पैसा है पावर है परंतु उन्हें कुछ करना ही नहीं है ।हर दिन दुनियाभर में लाखों बातें पर्यावरण को बचाने के लिए होती है परंतु जब किसी निर्णय पर पहुंचा जाता है तो आपसी गुटबाजी, अज्ञानता, और बेपरवाहपन बीच में आ जाते हैं ।जब तक हर व्यक्ति पर्यावरण के बारे में सतर्क और सजग नहीं होगा ,तब तक पर्यावरण की सुरक्षा एक पहेली ही बनी रहेगी। मानव जाति को कहीं ना कहीं पर्यावरण को बचाने की तकनीकी विकसित करनी ही पड़ेगी या फिर पर्यावरण के हश्र को रोकना ही पड़ेगा। हम सभी को इसी समझ के साथ कठिन से कठिन निर्णय लेने होंगे और यह जिम्मेदारी किसी खास संस्था ,देश, धर्म, और जाति की नहीं बल्कि समस्त मानवता की है । सबके साथ आने से कुछ ज्यादा प्रभाव होगा अन्यथा हमें अब तथाकथित कयामत या प्रलय के लिए तैयार हो जाना चाहिए। मैं कभी कभी अखबारों में पढ़ता हूं की 2050 तक समुद्र किनारे वाले शहर डूब जाएंगे, हर साल पृथ्वी का औसत तापमान 1 प्रतिशत या फिर 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ रहा है ,कही स्थानों में बाड़े व जंगल सूख रहे हैं, खनिज संसाधन खत्म होने वाले है,कहीं जानवर गांव व शहर में घुस रहे आदि। पर्यावरण की शिक्षा के दायरे को अब बढ़ाया जाए नई शिक्षा नीति के तहत पर्यावरण शिक्षा हर बच्चे को अनिवार्य रूप से बचपन से लेकर 12 कक्षा/20 वर्ष की आयु तक विद्यालय में पढ़ाया जाना चाहिए। अगर आने वाली पीढ़ी पर्यावरण की रक्षा नहीं कर पाई तो मेरे हिसाब से यहां 21वी सदी ही मानव जाति की आखिरी सदी होगी। पिछले 20 वर्षों से सतत विकास , प्रकृति का प्रयोग आने वाली पीढ़ियों के लिए बचाते हुए करना कि थ्योरी पूरी दुनिया में काफी प्रचलित हो रही है। मैंने कक्षा नवी में पढा था सतत विकास के बारे में इस तरह के उपायों को ज्यादा से ज्यादा फैलाना चाहिए। जिससे हर मानव को अपना अपना कार्य अच्छे से पता चल सके। प्रकृति का मानवीकरण तो हमने गजब का कर लिया, परंतु मानव का प्रकृति करण होना जरूरी हो गया है ।अन्यथा खतरनाक प्रकृतिक आपदाए हमारा इंतजार कर रही हैं।

मैं तो इस बात को मानता हूं कि दुनिया भर में रह रहे आदिवासियों/ ट्राईबल का बड़ा योगदान है पर्यावरण की सुरक्षा में। वरना यह धरती अब तक तो वीरान हो चुकी होती ,परंतु कुछ आदिवासि जातियां अब पढ़ लिखकर अपनी जमीनों काविदोहन कर रहे हैं ।जब हम अनपढ़ थे तो प्रकृति के बीच खेला करते थे,परन्तु अब पढ़े लिखे लोगों ने जंगल साफ करके खाली मैदान बना दिया।

प्रिय पाठको, जहां पर्यावरण पर ना तो पहला ना ही आखिरी यह लेख हे यह तो बस लेखक की कल्पना की कसौटी की परीक्षा पास करके शब्दों के रूप में बाहर आता है ।लाखों लेख इस विषय पर लिखे जा चुके हैं और आगे भी लिखे जाएंगे परंतु संदेश सिर्फ इतना सा है कि अगर समय रहते हम लोग कुछ नहीं करना चाहते तो बहुत कुछ खोने के लिए तैयार रहना होगा। हर वर्ष यूएनओ की पर्यावरण रिपोर्ट बाहर आती है, हर देश मे भी अपने अपने पर्यावरण पर रिपोर्ट जारी करते रहते हैं। रिपोर्टों के आंकड़े हर साल आने वाले विनाश की तरफ इशारा कर रहे हैं ।

प्रिय पाठको, हमारे देश में देशवासियों के पास वह गौरव है कि जब जब दुनिया खतरे में होगी तो कोई ना कोई महापुरुष जरूर आता है ,परंतु इस बार हम भारतीय लोगों को ही महापुरुष बनना होगा किसी महान इंसान ने कहा है कि भारत अगर मर गया तो दुनिया भी मर जाएगी किंतु दुनिया मर गई और भारत जीवित है तो दुनिया वापस से खड़ी हो जाएगी ।इसलिए हमारे पर दुनिया को बचाने का भार ज्यादा है, इसे हमें ढोना है और अपनी पुरातन संस्कृति को पुनर्स्थापित करके दुनिया को बचाना है आखिर में बस एक स्वरचित नारे के साथ इस लेख को समाप्त करता हूं ,हम सबका है भरोसा- करेंगे पर्यावरण की रक्षा। हर दर्द हमारा अपना है, हर नागरिक का यह सपना है, विश्वास अपने आप पर रखना है, सदैव पर्यावरण की सुरक्षा करना है और दुनिया को यूं ही चलते जाना है, अब सतत विकास का जमाना है।

जय हिंद जय मानव समाज।

इनायत अली
स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास)



शिक्षा और तकनीक



आज के आधुनिक युग में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां तकनीकी का प्रयोग न हो रहा हो, शिक्षा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। शिक्षक द्वारा निदेशित सॉफ्टवेयर के माध्यम से आज विद्यार्थी बिना विद्यालय जाए शिक्षा ग्रहण कर पा रहे हैं तो सिर्फ तकनीकि की वजह से। तकनीकि ने पठन - पाठन प्रक्रिया को बहुत सरल बना दिया है, आज जब चाहे इंटरनेट के माध्यम से अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहे पढ़ तथा देख सकते हैं। शिक्षा में तकनीक मानवीय क्षमता के विकास, शिक्षक और शिष्य दोनों को सरल और तीव्र गति से सीखने-सीखाने में, शिक्षण सामग्री के प्रभाव पूर्ण प्रयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षण में कम्प्यूटर आधारित शिक्षा तकनीकों का उपयोग भारत की प्रसिद्ध शिक्षा प्रणाली और संस्थानों द्वारा अपनाया गया है। शब्दों और प्रतीकों की विविधता कम्प्यूटर की महान शक्ति है जो शैक्षणिक प्रयास का केंद्र है। ई–लर्निंग और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षण अधिक रोचक और आसान हो रहा है। इंटरनेट तथा वर्ल्ड वाइड वेब के माध्यम से शिक्षक अपने विद्यार्थियों तक पहुँच सकते हैं और उनको घर बैठे पढ़ा सकते हैं। इंटरनेट मानव ज्ञान का एक उच्चतम संग्रह है। आई.सी.टी. डिजिटल पुस्तकालय जैसे डिजिटल संसाधनों के सृजन की अनुमति देता है, जहाँ विद्यार्थी, शिक्षक और व्यवसायी शोध सामग्री तथा पाठ्यक्रम सामग्री तक पहुँच सकते हैं। आई.सी.टी. शैक्षणिक संस्था के दिन - प्रतिदिन के प्रशासनिक गतिविधियों को आसान और पारदर्शी तरीके से नियंत्रित करने तथा समन्वय और निगरानी के लिये अवसर प्रदान करता है। पंजीकरण / नामांकन, पाठ्यक्रम आवंटन, उपस्थिति की निगरानी, समय सारिणी/वर्ग अनुसूची, प्रवेश के लिये आवेदन, छात्रों के दाखिले में जाँच इस तरह की जानकारियाँ ई–मीडिया द्वारा पाई जा सकती हैं।

वर्तमान परिदृश्य में देखें तो शिक्षा (सीखने-सिखाने) में तकनीकी का महत्व बढ़ता जा रहा है। लगभग पिछले डेढ़ साल से शिक्षण और अधिगम कार्य मुख्य रूप से तकनीकि पर ही निर्भर रहा है। ऐसा नहीं है कि शिक्षा क्षेत्र में तकनीकि का प्रयोग भारत में पहले नही हो रहा था, लेकिन विश्व व्यापी महामारी कोविड-19 ने इसके प्रयोग के दायरे को कई गुना बढ़ा दिया है।

राहुल
स्नातकोत्तर शिक्षक -अर्थशास्त्र



कैप्टन विक्रम बत्रा का सर्वोच्च बलिदान



यदि मुझे किसी की समृति को जीवित रखने का अवसर मिले, तो मैं कैप्टन विक्रम बत्रा की स्मृतियों को जीवित रखने का प्रयास करूंगी। कैप्टन विक्रम बत्रा,परमवीर चक्र से सम्मानित, भारतीय सेना के एक महान वीर योद्धा थे। उन्होंने 1999 के कारगिल युद्ध में अपने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और देशप्रेम से पूरे राष्ट्र का सिर गर्व से उचा किया। उनका प्रसिद्ध वाक्य -" यह दिल मांगे मोर"- आज भी हर भारतीय के हृदय में जोश और गर्व भर देता है।

यदि मुझे उनकी समृति को जीवित रखने का अवसर मिले, तो मैं उनके जीवन और बलिदान की गाथा की नई पीढ़ी तक पहुँचाना चाहूंगी। मैं अपने विद्यालय में उनके नाम पर एक "वीरता क्लब" शुरू करूंगी, जहाँ छात्र देशभक्ति गीत, कविताएँ और नाटक प्रस्तुतियाँ करेंगे। इस क्लब के माध्यम से सैनिकों के परिवारों की सहायता के लिए छोटे-छोटे अभियान भी चलाए जाएंगे। मैं हर वर्ष कारगिल विजय दिवस पर उनके नाम से एक पौधा लगाँऊंगी और यह संकल्प लूँगी फि जैसे यह पौधा बढ़ेगा, वैसे ही हमारी देशभक्ति भी बढ़ती रहेगी। इसके साथ ही, मैं अपने मित्रों को भी प्रेरित करूंगी कि वे देश की सेवा के लिए समर्पित रहें और हमारे वीर सैनिकों के योगदान को कभी न भूलें।

कैप्टन विक्रम बत्रा का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चा देशप्रेम केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कर्म से प्रकट होता है। उनका बलिदान हमारे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है, जिसे सदैव याद रखा जाएगा।

वाहिदा खातून
9-अ



मेरे सपनों का भारत



जब भी मैं अपने देश के बारे में सोचती हूँ, तो मन गर्व और उम्मीद से भर जाता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर गली, हर भाषा और हर परंपरा में अपनी अलग खूबसूरती है। लेकिन मेरा सपना है कि आने वाले वर्षों में हमारा देश न सिर्फ आगे बढ़े, बल्कि हर नागरिक को एक बेहतर जीवन जीने का अवसर मिले।
मेरा सपना है कि 2047 तक हमारा भारत पूरी तरह शिक्षित और आत्मनिर्भर बने। हर बच्चा स्कूल जा सके, चाहे वह गाँव का हो या शहर का। एक बार मैं गाँव गई थी, जहाँ मैंने देखा कि कुछ बच्चे पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ रहे थे। तब मैंने मन ही मन सोचा — जब तक हर बच्चे तक शिक्षा नहीं पहुँचेगी, तब तक असली आज़ादी अधूरी रहेगी।
आज हमारा देश "डिजिटल इंडिया" की दिशा में आगे बढ़ रहा है। गाँवों तक इंटरनेट पहुँच चुका है और अब बच्चे मोबाइल से भी पढ़ाई कर रहे हैं। जब मैं अपने गाँव के बच्चों को ऑनलाइन क्लास में भाग लेते देखती हूँ, तो लगता है कि मेरे सपनों का भारत अब हकीकत बन रहा है।
मेरे सपनों के भारत में महिलाएँ आत्मनिर्भर होंगी, और हर बेटी को शिक्षा व सुरक्षा का पूरा अधिकार मिलेगा। "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" जैसे अभियानों ने समाज की सोच बदलनी शुरू कर दी है — और यही बदलाव मेरे भारत की असली पहचान है।
मेरा विश्वास है कि अगर हम सब ईमानदारी, मेहनत और प्रेम से आगे बढ़ें, तो एक दिन मेरा भारत वही बनेगा जिसका सपना हर भारतीय देखता है —
एक ऐसा भारत जो आधुनिक भी हो और मानवीय भी।
एक ऐसा भारत जिस पर दुनिया गर्व करे।
और तब हम सब कहेंगे — "यही है मेरे सपनों का भारत।"

रेनू अग्रवाल
12- ब

मेरे जीवन का लक्ष्य: इंजीनियरिंग



प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कोई न कोई लक्ष्य होना चाहिए। लक्ष्यहीन जीवन उस नाव की तरह होता है जो स्वच्छंद रूप से समुद्र में छोड़ दी गई हो। हर व्यक्ति को परिश्रम करने के साथ-साथ इस बात का निर्णय भी अपने मन में कर लेना चाहिए कि उसे भविष्य में क्या करना है। अथवा क्या बनना है। लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जिसको हम प्राप्त भी कर सकें और जो हमारे मन को प्रसन्नता भी दे। मैं बड़ी होकर इंजीनियर बनना चाहती हूं। मेरे मन को इंजीनियर बहुत आकर्षित करते हैं। वे जब देश के विकास में निष्ठापूर्वक जुटकर उसको ऊंचे शिखर पर ले जाने की कोशिश करते हैं तो मेरा मन उनके प्रति नतमस्तक हो जाता है। प्रथम श्रेणी के इस पद से आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होती है। इंजीनियरिंग के लिए नौकरी और स्वरोजगार दोनों के ही मार्ग खुले रहते हैं।

सेलेना
4-स

कहानी मेले की



मैं फिलहाल असम में रहती हूं। मेरे पिताजी वायुसेना में कार्यरत हैं। वर्तमान में वायुसेना स्टेशन में एक मेला था। मैं उस दिन और उससे पहले बीते हुए दिनों में काफी उत्साहित थी। पर जैसे ही मैं उस दिन उठी जिस दिन मेला था, उठकर मैंने जैसे ही खिड़की से बाहर देखा तो बारिश हो रही थी और बहुत सारा पानी बाहर भरा हुआ था । तभी फोन पर अधिसूचना आई, अधिसूचना में लिखा था कि आज होने वाला मेला अब नहीं होगा । यह सुनकर मैं बहुत उदास मन से बोली की मम्मी हो गई सारी तैयारी बेकार । उसके 3 घंटे बाद फिर से सभी के मुखमंडल पर फिर से प्रफुल्लता छा गई। मैंने बोला क्या हुआ, तभी मेरी मम्मी बोली मेला आज ही है और मैं फिर से खुश हो गई । मैं जैसे ही मैदान में पहुंची तो देख पूरा मैदान कीचड़ और दलदल से भरा हुआ है। मैंने जैसे ही पहला कदम बढ़ाया मैं गिर गई। बहुत तेजी से चोट लगी। हां पर मैंने और मेरे पूरे परिवार ने बहुत खाना खाया । उसके बाद बहुत सारे खेल खेले। उसके बाद बहुत नाचा, कीचड़ में नहा के मेले का मजा उठाया था । घर जाने पर बहुत सारी फोटो भी देखी जो मैंने मेले में खिंचवाई थी। पर रात में जब पैर में दर्द शुरू हुआ तो सारा मजा बेकार हो गया।

वर्षा
सातवीं-द



योद्धा



दुविधा का वो दौर घनघोर,
जो युद्ध अपने आप से।
सरल, सहज और सख्त है,
न जाने क्यों वो स्तब्ध है।
समेट रहा पंख को वो,
किस घड़ी के वास्ते ।
डर रहा वो इस कदर कि,
जैसे अंतिम सांस है।
अब उठ खड़ा हुआ वो वीर,
सब कुछ संवारने ।
है जीत को निहारने,
आगे ही आ रहा वो
शाश्वत ब्रह्मांड के।
वो उठ खड़ा हुआ है यूँ जीतने के वास्ते,
वो उठ खड़ा हुआ है यूँ जीतने के वास्ते ।।

आयुषी,
XI – अ

मेहनत का अंजाम



मेहनत कर तु लगातार,
चाहे गिरना पड़े बार-बार
क्या बिना कुछ किये ही
मिला है किसी को सफलता का उपहार
कठिन होता है सुई से लगाना धागा,
लेकिन प्रयास कर, वह भी हो जाएगा।
परिश्रम ही वो रास्ता है,
जो तुझे, सफलता तक पहुंचाएगा।
बैठे रहने से क्या है होता ?
जो करे आलस, अंत मे हमेशा है रोता।
तो उठ और कर प्रयास,
शुरु कर बढ़ना अपने लक्ष्य के पास ।
जब तक न पूर्ण हो अरमान, रुकना मत खींच लगाम,
कर प्रयास देख लेना तू प्रमाण की क्या होता है, मेहनत का अंजाम।

अनन्या सिंह
7-अ



आज़ादी की गूँज

आज़ादी केवल जश्न नहीं,
यह हर मन का सच्चा दर्शन है।
खुली हवा में सांस है यह,
आगे बढ़ने का विशवास है यह ।
हार को पीछे छोड़ उड़ान भरो,
सपनों को अब साकार करो ।
नया सवेरा अब तुम्हारा है,
हर दिन एक नया किनारा है ।
जाति, धर्म बंधन सब टूटे,
शिक्षा से न कोई छूटे।
सबका मान हो, सबकी हो बात,
यही है सच्ची आज़ादी का साथ।

श्रृष्टि सिंह
9-अ



दादा और मैं

1- मैं शहर में रहता बेटा प्यारा,
पापा करते दिन भर काम हमारा।
मन में सपना लेकर चलता,
दादा से मिलने गाँव को चलता।
हरे खेत और मिट्टी की खुशबू,
नन्हा मन भर जाए मधुबू।
2- दादू को कुछ देना चाहता ,
पर क्या दूं ये समझ न पाता,
खिलौने, चित्र या फूल बनाऊं
उनके चेहरे पर मुस्कान लाऊं।

अयांश कुमार
1-स

माँ हमारी सबसे प्यारी



माँ हमारी सबसे प्यारी,
फूलों जैसी है वो कोमल नारी।
रोज़ सुबह सब को उठाती,
खाना बनाकर सबको खिलाती।
पढ़ाई पर हमारी देती ध्यान,
बड़ों को भी देती मान-सम्मान।
सबसे प्यारी माँ हमारी,
परीक्षा की भी वो है तैयारी।
माँ ही मेरी खुशियों वाली है,
माँ ही तो दुनिया रंगीन है।

अभिक सदाई
5-अ

मत बाँटो इंसान को



अब भी हरी-भरी धरती है
ऊपर नील गगन है।
पर न इंसानियत हो तो,
जग सूना -जलता रेगिस्तान है।।
मंदिर - मस्जिद - गिरजाघर ने
बाँट लिया भगवान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को ॥
अभी प्यार का जल देना है,
हर प्यासी चट्टान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा,
मत बाँटो इंसान को ॥
रोक न पाएगा फिर कोई,
मौसम की मुसकान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा,
मत बाँटो इंसान को ।
अभी राह तो शुरू हुई है,
मंजिल बैठी दूर है,
उजियाला महलों में बंदी,
हर दीपक मजबूर है।।

निखिल , 8-स

मेरी दादी



मेरी दादी सबसे अच्छी सबसे सुंदर,
गांव में रहती, गाय पालती, खेती करती ।
अपने दुबले-पतले हाथों से मुझे, दूध पिलाती और खाना खिलाती।
अपने हाथों से मेरे लिए स्वेटर बुनती,
कभी-कभी ऊंचा भी सुनती।
रोज मुझे राजा रानी के किस्से सुनाती।
मेरी दादी सबसे अच्छी सबसे सुंदर

अक्षिता कठैत
4-अ

मेरी सहेलियां



मैं हूँ तुही
दिखने मे सबसे बड़ी बड़ी,
आनंद लेती हूँ सबको करके खड़ी खड़ी ।
छोटी सी उदिप्ता है कितनी प्यारी-प्यारी,
सांवली सी आलिया के बाल है लंबे भारी
चश्मेवाली सेजल की उँगलियां हैं छोटी छोटी
घने बालों की करती है वो एक सुंदर चोटी
रोनेवाली फरनाज बनती है झांसी की रानी
पतली कमर वाली लंबी पूर्वी हम सबमें है सबसे ज्ञानी
धीमी सी लीज़ा चलती आहिस्ता-आहिस्ता
और नाज, तपस्या, साक्षी, हैं सबसे सखी सा रिश्ता



तुही उमाशंकर दत्त
4-ब

कविता



हम नन्हे मुन्ने बच्चे हैं ,
दांत हमारे कच्चे हैं |
दिल के हम सच्चे हैं ,
वादों के हम पक्के हैं|
हम भी सरहद जाएंगे,
सीने पे गोली खायेंगे |
मर जाएंगे मिट जाएंगे,
देश की शान बढ़ाएंगे |

लाइबा परवीन
2 अ



অসমীয়া বিভাগ

ASSAMESE SECTION



এজাক বৃষ্টি সপোনৰ



কিনকিনিয়া বৃষ্টিজাক দেখিছানে?
জানানে বিলাইছে কিহৰ বতৰা?
এয়া কাৰোবাৰ চকুলো, নে আশাৰ ৰেঙনি?
হয় জানো এয়া বিষাদৰ বতৰা?নে হুমনিয়াহ?
নাই নহবওতো পাৰে।
ভাবিছানে কেতিয়াবা?
হব পাৰে এয়া কাৰোবাৰ দীর্ঘ অপেক্ষাৰ ফল!
এনে অপেক্ষা,যি হবও পাৰে অবাঞ্ছিত।
বহুজনৰ মুখত স্বতঃস্ফুর্তভাৱে ফুটি ওঠা
হাঁহিটিত জানো থাকিব পাৰে কৃত্তিমতা?
নাই নহয়।
এয়াযে সপোন।
কিছু দেখা,কিছু নেদেখা।
আছে বহু কথা।
দেখিছানে সেই ক'লা ডাবৰ চপৰা?
যাৰ ফাঁকে ফাঁকে ,দৃষ্টিমান হোৱা
সেই ৰঙীন ৰামধেনু।
যিজাক বৰষুনে তোমাৰ চকুলো ধোৱে,
সিজাকেই নকৰে জানো,সেউজী ধৰাক শুৱনী?
নাসানে জানো চহা কৃষকৰ পথাৰখনিত সেউজ ৰহণ?
হব পাৰে ই কেতিয়াবা ৰুদ্র,
কিন্তু সেয়াওতো এক অনাবিল সৌন্দর্য্য।
নহয় জানো ই চন্দ্রমাৰ ক'লা চেকুৰাবোৰৰ দৰে?
বেয়া নাথাকিলে ভালৰ মুল্য জানো কোনোবাই অনুভৱ কৰে?
হয়।সেয়ে আকোৱালি লোৱা তুমি
এইজাক বৃষ্টি সপোনৰ।

জাহিদা বেগম
প্রাথমিক শিক্ষয়িত্রী

শ্বহীদ



তুমি হ'লা দেশৰ অতন্দ্ৰ প্ৰহৰী
মৃত্যুৰ ভয় ভৰিৰে গচকি
ওলাই অহা আগবাঢ়ি সশস্ত্ৰ বাহিনী ।
বন্ধুক , বাৰুদ আৰু কামানৰ গৰ্জণ
নকৰা কেৰেপ একো ,
তুমি যে সাহসী ।
লাখ - লাখ জনতাৰ আশিষ লৈ
শত্ৰুৰ মাজত আছা থিয় হৈ তুমি।
নবজাতকৰ মুখনিও নেদেখিলা তুমি।

পত্নীৰ শিৰৰ ৰঙা সেন্দুৰ আৰু
পুৱতি আকাশৰ উদিত সূৰ্যই
প্ৰেৰণা যোগালে তোমাৰ যাত্ৰা পথত।
হে' শ্বহীদ
মৰিও অমৰ তুমি ।
জনমে জনমে আহি মাতৃৰ কোলা
গৌৰৱৰে উপচাই তুমি
দিবা নবপ্ৰজন্মক ত্যাগৰ বাণী ।

পৰিস্মীতা হাজৰিকা
টী. জী. টী অসমীয়া



সময়



সৃষ্টিৰ সময়ৰ
ধূলিকণা লুকাই - ভাকুৰ খেল,
য'ত হেৰাই গ'ল আপোনজনৰ মাজৰ
সেই ধুনীয়া মেল ।
আজিও আছে সেই একে ধৰণী ,
সেই একেই প্ৰকৃতি খন ,
সলনি হৈ আছে
অকল আমাৰ মন ।
ঘূৰি যায় মন আজি
সেই অতীতলৈ ,
শান্তিৰ বতাহ বিচাৰি
এখন্তেক জিৰাবলৈ ।
বিয়াকুল আজি মন
হ'ব খোজে মুকলি ,
অতীত আৰু ভৱিষ্যতৰ মাজত
গৈ আছে উতলি ।

Jessica Rani Patangia
4-C




SPEAKING
LISTENING
ENGLISH
READING
LEARNING
WRITING

Mental Health and Well-Being



In the modern world, mental health has emerged as one of the most crucial components of a person's overall well-being. While physical health has traditionally received more attention, people are now beginning to understand that emotional and psychological health are equally important. Mental health influences how we think, feel, and behave. It shapes the way we handle stress, overcome difficulties, build relationships, and make choices. Therefore, nurturing mental well-being is essential for leading a balanced, fulfilling, and meaningful life.

Mental health is not merely the absence of mental illness. It is a state of emotional resilience, positivity, and the ability to cope with life's challenges. A person with good mental health can manage stress effectively, maintain healthy relationships, adapt to changes, and stay productive. On the other hand, poor mental health can affect every aspect of life, leading to lack of motivation, low self-esteem, difficulty concentrating, and strained relationships. In severe cases, it may contribute to anxiety disorders, depression, and other mental health conditions.

Today's fast-paced lifestyle has significantly increased stress among people of all age groups. Students face academic pressure, competition, and the fear of failure. Adults struggle with workplace stress, financial responsibilities, and balancing personal and professional lives. The impact of social media, unrealistic standards of success, and limited emotional support further add to mental strain. As a result, many individuals find it challenging to express their feelings or seek help, often fearing judgement or misunderstanding. This stigma surrounding mental health prevents people from getting the support they need.

Promoting mental well-being begins with recognising its importance. Self-care plays a vital role in maintaining emotional balance. Healthy habits such as regular exercise, adequate sleep, a nutritious diet, and mindful activities like meditation or journaling can significantly improve mental health. These practices help calm the mind, reduce anxiety, and build emotional strength. Pursuing hobbies, connecting with nature, and spending quality time with family and friends also bring joy and relaxation.

Equally important is the ability to talk about emotions openly. Sharing worries with trusted individuals—such as parents, teachers, friends, or counsellors—can provide relief and clarity. Seeking help from a mental health professional should never be seen as a weakness. Just as we consult a doctor for physical issues, reaching out to a psychologist or counsellor for emotional concerns is a healthy and responsible step.

Schools and educational institutions play a crucial role in promoting mental well-being. By creating a supportive and inclusive environment, schools can encourage students to express themselves without fear. Activities that promote teamwork, mindfulness, and emotional awareness help children develop resilience and strong coping skills. Regular workshops, counselling facilities, and open discussions on mental health can break the stigma and normalise seeking help.

Communities and families also have a responsibility to support mental well-being. A loving, understanding, and non-judgemental environment at home can make a significant difference in an individual's emotional health. Encouraging positive communication, listening without criticism, and showing empathy can strengthen relationships and promote psychological safety.

In conclusion, mental health and well-being are essential for overall happiness and success. A healthy mind allows us to face challenges with courage, maintain meaningful relationships, and achieve our goals. As a society, it is important to prioritise mental health, raise awareness, and support those who may be struggling. By fostering an environment of compassion, understanding, and open communication, we can build stronger, healthier, and more resilient communities. When we care for our minds as much as our bodies, we take a powerful step toward a brighter and more harmonious future.

CHAMPABATI SINGHA
TGT ENGLISH



INDIAN SPORTS

Indian sports are blend of traditional games and modern international disciplines, with cricket dominating landscapes, supported by popular leagues the Indian permier league. While traditional sports like kabaddi, kho-kho and chess have ancient origins and are experiencing a resurgences, the national is also making significant progress in sports like badminton, wrestling, javelin and shooting, thanks to the success of athletes like Neeraj Chopra, P.V. Sindhu, and Gukesh D. Despite challenges such as historical policy gap and economic barrier, recent government policies, improved facilities and technological integration are driving a new era of sports in India.

Himangsu Boro
IX-B



The Story of Icarus



One of my favourite myths from Greek mythology is the story of Icarus. Icarus was the son of Daedalus, a brilliant inventor. The two were imprisoned on an island, and to escape their captivity, Daedalus crafted wings made of feathers and wax. But before they took off, he warned his son, "Don't fly too high, or the sun will melt the wax; don't fly too low, or the sea will swallow you; stay in the middle, stay safe."

But once Icarus took flight, soaring the sky with his wings stretched wide, something changed. He didn't want to stay in the middle; he wanted to know what it meant to fly. So he soared higher and higher straight towards the sun; and yes, the wax melted, the feathers came apart, he fell. Yet, Icarus didn't scream; he didn't regret it, but he laughed. He laughed as he fell, for he knew that to fall you have to soar high. There's a kind of bitter triumph in crashing when you're supposed to be soaring, something victorious in reaching past your limits even if it costs you something. But in that moment, Icarus had lived fully; he touched something extraordinary, something worth falling for.

I love this story because, to me, it's not about failure; it's about living. I believe a lot of us have been doing what Daedalus had warned, staying in the middle, playing it safe, flying just high enough. But the future belongs to those willing to shape it. You may face uncertainty, failure, and doubt, but you also find strength, clarity, and resilience. And if there's anything I hope you take from today, from this article, from our school or from Icarus, it's this: don't live life trying to avoid the fall. Remember Icarus not as a warning but as a kid who looked at the sun and said, "What if?" the one who didn't settle for escaping but wanted to feel everything.

As we move ahead in our lives, I hope you don't hold back; you reach for the sun, just like Icarus. Fly too high, love too much, care too deeply and laugh too loudly; and if you fall, laugh as you fall, because that's how you know you were really flying.

KANISHKA GUPTA
XII-B



THE MOTHER DUCK AND THE LITTLE DUCKLINGS



One day, a mother duck and her little ducklings were on their way to a lake. The ducklings were very happy following their mother. All of a Sudden the mother duck saw a fox. She was frightened and shouted, "Children hurry to the lake. There's a fox:" The ducklings hurried towards the lake. The mother duck wondered what to do. She began walk back and forth dragging one wing on the ground. The fox became happy. He said to himself, "It seems that she's hurt and can't fly! I can easily catch and eat her!" Then he ran towards her. The mother duck ran, leading the fox away from the lake. The fox followed her. Now, he wouldn't be able to harm her ducklings. The mother duck looked towards her ducklings and saw that they had reached the lake. She was relieved, so she stopped and took a deep breath. The fox thought she was tired and came closer, but the mother duck quickly spread her wings and rose up in the air. She landed in the middle of the lake and her ducklings followed her. The fox can't reach them because they were in the middle of the lake. This is how mother duck protected her ducklings from the fox.

NIKHIL
VIII-C



SINGLE USE PLASTIC



A Convenience That Costs the Earth

Single use plastic - a symbol of modern convenience. from straws, cups, to bags, and packaging-these care everywhere. But harm our environment, wildlife, and even health.

I. What is Single-Use Plastic?

Single-use plastics are products designed to be used only once before disposal. Examples - plastic, cutlery, bottles, grocery bag. and food wrappers. They are cheap to produce but take hundreds of years to decompose.



2. **Environmental Impact**

- **Pollution:** Ends up in oceans, rivers, and soil, harming wildlife and ecosystems.
- **Wildlife Harm:** Animals ingest or get entangled, leading to injury or death.
- **Climate Impact:** Made from fossil fuels, releasing greenhouse gases throughout its lifecycle.
- **Microplastics:** Breaks down into tiny particles that contaminate food, water, and air. **Non-Biodegradable:** Persists for hundreds of years, damaging land and marine environments.

3. **Effects on Human Health**

Microplastics have been found in drinking water and even human blood. Scientists warn that toxic chemicals from plastic can cause hormonal im-balances and long-term

Journey of Single-Use Plastic :

In many countries plastics have been found in drinking water and human blood. Scientists warn that toxic chemicals from plastic can cause hormonal imbalances and long-term health risks.

What Can We Do?

- Carry cloth or jute bags
- Use metal or bamboo straws
- Choose reusable bottles and containers
- Support eco-friendly brands

4. Government and Global Actions

Government of India:

- Banned single-use plastic items like straws, cutlery, and bags (from July 2022).
- Promotes alternatives like cloth and paper bags.
- Runs awareness drives under Swachh Bharat Mission and Plastic Waste Management Rules.

Global Efforts:

- UN Plastic Treaty (in progress): Aims to end plastic pollution worldwide.
- EU & other nations: Banned or limited single-use plastics.
- Cleanup Campaigns: Global initiatives like World Cleanup Day and Beat Plastic Pollution encourage community action and recycling.

NAYAN JYOTI SHARMA
XI-B



ZUBEEN GARG VOICE OF VERSALITY



Zubeen Garg is one of india's most talented and versatile singers, Composers, and actors. Born 18 november 1972 in Guwahati, Assam, he showed passion for music from a very young age. Growing up in culturally rich environment of Assam, zubeen was deeply influenced by traditional Assamese music as well as modern Indians melodies. The combination of these influences allowed him to develop a voice that is not only unique but also emotionally powerful, capable of expressing a wide range of feelings through music.

His journey as an artist has been shaped by deep love for melody and rhythm and by an innate ability to connect with listners. Even from a young age he showed creativity and dedication that set him apart experimenting with different styles and forms of music. This fusion of classical inspiration, folk, traditions and contemporary sounds has allowed Zubeen to create songs that are both meanings and entertaining appealing to audiences of all ages.

The charm of his music lies in the way it balances cultural authenticity modern appeal, making it, relatable yet innovative. Overtime this blend has helped him carve a place not just in regional music but also in main stream Indian music earing him a loyal fan base his voice carries both energy and emotion reflecting the rich heritage of Assamese music while embracing the dynamics of contemporary Indians melody

Zubeen Garg has recorded and written over 38000 songs in multiple languages including Assamese, Hindi, Bengali, Tamil, Kannada and more. This incredible body of work highlights not only his versality but also his dedication, creativity and impact on music across India and beyond

PRATIM DAS
VI-C



Teamwork when it matters most



Losing forces us to confront our weakness, not individually but as a unit. Did the defense break down? Was communication lacking? When you win those minor issues can be masked by the excitement. When you lose, they become visible and that's a good thing.

A loss pushes players to stop pointing fingers and start lifting each other up. That kind of teamwork born out of shared failure is far stronger than the easy camaraderie of a winning streak. It is the kind of loyalty that extends beyond the field or court and into the hall of PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 2, Tezpur, Assam.

SRISHTI SINGH
IX-A



SPORTS AND WE



Sports play a very important role in our lives. They help us stay healthy, fit, and active. Playing sports builds confidence, teaches teamwork, and improves discipline whether its cricket, football, hockey, or athletics, every sports teaches us the value of hard work and fair play.

Sports are not only about winning or losing but also about participation and learning. They keep our minds fresh and reduce stress. In schools, students should be encouraged to take part in games regularly. Famous sportspersons Sachin Tendulkar, P.V. Sindhu, and Neeraj chopra inspire the youth to aim high and achieve success through dedication and effort.

In conclusion, sports are an essential part of life. They make us strong physically and mentally and help in the overall development of our personality.

GEETANJALI KURMI
IX-D



SPORTS- IN OUR LIFE



Sports play a vital role in shaping a person's physical health, mental strength and character.
They are not just a source of entertainment or competition but a key part of a balanced and disciplined life.
Whether it's individual games like boxing, swimming, taekwondo or badminton or team games like basketball, football and cricket, each sport teaches valuable life lessons.
Sports improve physical fitness by keeping the body active, flexible and strong.
They enhance stamina, coordination and concentration.
Mentally, sports teaches patience, teamwork, leadership and decision making.
A person who plays sports learns how to accept both victory and defeat with grace – skill that applies far beyond the playground.
Team sports build unity and cooperation among players, showing how collective efforts leads to success.
On the other hand, individual sports strengthen self – reliance, discipline, and personal focus. Both promote fair play and sportsmanship – essential qualities for a healthy society.

DARADI ROY
IX-D



THE QUALITIES OF A PERSON



A person who looks at the good side of things sees good things. We call such a person an optimist. One, who looks at the dark side of things, is a pessimist. One, who looks at the good qualities of others, will make many friends and live a happy life. The others, will make their own as well as the lives of others miserable. We expect others not to look at or mind our bad qualities. Let us remember that the others too expect the same from us. A very goodway to live a happy life with several friends is to learn to look at the qualities of others.

NIKHIL
VIII- C

CELEBRATION OF VANDE MATARAM



"Vande Mataram" (Sanskrit for "I bow to thee, Mother") is more than just a national song; it is an enduring symbol of Indian patriotism that inspired millions during the freedom struggle. The song which was composed by Bankim Chandra Chattopadhyay, has stood for more than a century as a timeless symbol of India's spirit of freedom and unity. The song first appeared in the novel Anandamath, and soon rose above literature to become the heartbeat of the Indian national movement.

Marking 150 years of Vande Mataram is not just a celebration of a song but a tribute to the emotions, sacrifices, and ideals it inspired. For countless freedom fighters, chanting "Vande Mataram" became an act of courage and resistance. Its emotive words and melody ignited a deep sense of devotion to the motherland and fuelled India's collective struggle for independence.

The song personifies India as a divine mother—beautiful, nurturing, and sacred. It expresses deep love and reverence for the motherland. It describes the land's rivers, fields, forests, and seasons, portraying India as a place of plenty and wealth, grace, and strength. During the freedom struggle, Vande Mataram became a call to rise with bravery and devotion. Its words inspired countless Indians to fight for independence. The song reflects collective identity and unity. Chanting "Vande Mataram" made people feel connected as one nation. It blends patriotism with spirituality, praying divine qualities like strength, righteousness, and fearlessness.

A century later, Vande Mataram continues to arouse pride, reminding us of the values of unity, cultural richness, and unwavering love for the nation.

In Short, the essence of Vande Mataram lies in devotion to the motherland, pride in India's beauty, and the inspiration to protect and serve the nation with courage and unity.

Kundan Sarkar
VII - A

The Undiscovered



A silent, empty page.
No metaphor to keep,
No rhyme upon the stage.
A voice that has no name,
A breath that hasn't sighed.
It will not rise to fame,
It's nowhere to be tied.
The little and the form,
Are shadows in the air.
It weathered no dark storm
A nothingness laid bare.

It is, because it's not.
It's found within the lost,
A truly empty plot,
And worth precisely cost.

RANJOT SINGH
VI-D

DON'T GIVE UP



If you keep on going
And never stop,
You can keep on going,
You can make it to the top.
Life is full of mountains,
Some are big and some are small,
But if you don't give up,
You can overcome them all.
So keep on going,
Try not to stop,
When you keep on going,
You can make it to the top.

SHREYA BHATTACHARJEE
V-A



A Day In My Little World

Morning comes with sleepy eyes,
Sun peeks softly through the skies.
Books are waiting on my chair,
Dreams still dancing in the air.

School bell rings – I rush to go,
Shoes untied , my pace is slow.
Friends all laugh , the teacher smiles,
Lessons walk with me for miles.

Sometimes I win, sometimes I fall,
But every try feels worth it all.
The world is big yet I can see,
A brighter day belongs to me.

When stars come out, I close my eyes,
And whisper thanks beneath the skies.
Tomorrow page is still unknown,
But step by step, I'll make it my own.

YASHVI NEGI
V-C



THE FUTURE OF INDIA LIES IN OUR HANDS

We are the dreamers, young and free,

Builders of what the world will see.
With hearts so bold and minds so bright,
We'll turn the darkness into light.

Each dreams we chase, each truth we stand,
Shapes tomorrow – stand by stand.
From tiny seeds the forests grew,
From us the nations greatness flows.

Let's rise with courage, hand in hand,
To paint new hopes across the land.
Let's kindness bloom where hatred ends,
For we are India's strongest friends.

No power can break, no storm demands,
For the future of India lies in our hands.

Nishtha Das
IX-C

THAT ONE DISTRACTION



She lays every night
Staring at the celling
And says" I will manage my time Better from tomorrow
But all she get everyday tomorrow was GUILT as feeling
"That one distraction!"
She screams
Unsure that will she ever pursue her dreams
She felt her determination,
Fading by her side
As that one distraction was taking over
GUILT was the thing she sat beside " why can't I quit this one
Distraction" there are so many hobbies I can enjoy
Why should I let that one distraction be the source
of my joy?"
I can quit it if I try
She claims.
"I don't need to jump,
Straight from the Aero plane to the ground,
But pull the parachute and gradually unbound.
She applies this theory in her life
Walks to the mirror and looks straight in my eyes
And give me a hint while waving a goodbye!

ANANYA SINGH
VII-A

ZUBEEN GARG



Zubeen Garg sir is a name we all know
His songs make our heart glow.
He Sings with love, with power and pride,
From Assam he began his way,
Now the whole world knows his say.
He Sings in hindi, Assamese too,
Every song feel fresh and knew.
He teaches us to chase our dream,
To work with hope Through his songs we learn each day,
That kindness always Find a way
Zubeen sir is more than fam
He brings hounor his name
We thank him for his gift so rare
We thank you, for always being there

Arnav Kashyap
VI- D

MY SCHOOL & MY PRIDE



My school is such a lovely place.

It fills my heart with joy and grace.
We learn to read, we learn to write.
Our future here grows big and bright.

My school's a garden where dreams bloom true,
With books and colors, games, and fun too.
Our joyful hearts shine like the sun.
We care, we share, we act as one.

From morning prayers to the final bell.
Each day has stories I can tell.
My teachers guide me with gentle care.
In every game and everywhere.

To reach our dreams, we always try.
With hope and courage, we touch the sky.
My school's the best, I say with pride.
It's where my heart and hopes reside.

ANIKA
III-A

MY 'MAA'- MY PRIDE



My world begins with 'Maa' so dear.
Her loving words I always hear.
She is my light , my morning sun,
With her, my life's a happy one.

My mother's love is deep and wide..
It fills our hearts with joy and pride..
She works for us both night and day..
Her love will never fade away..

My mother taught me right from wrong..
She made my little heart so strong...
She helps me grow, she helps me learn...
For her love, I always yearn...

Her gentle hands , her smiling face.
Bring happiness to every place.
She wakes before the morning light..
And works for us both day and night...
Love you Maa...

Arush Rajput
II-B

THE NATURE



Nature is everywhere,
On the mountains and in the river.
Nature is the life for plants and trees,
The beautiful blessing we receive!

If you want to save nature,
Don't dare to cut the trees!
Every day plant a flower,
And you will be happy every hour!
Save environment, save life.

Himani Sharma
V-B

MY MAA



My maa is gentle, kind and sweet,
She makes my world so bright and neat,
She hugs me tight when I feel sad,
And makes me smile when I am bad.
She cooks, she sings, she tells me tales,
She holds my hand on windy trails,
Oh Maa, you are my shining star
I love you most -just as you are!

Trinabh Baruah
II- B

MAA- 'MY SHINING STAR'



Maa, I love you
If I could choose a mother,
It would be no one another.
You have given me so much,
I can feel the warmth in every touch!!
You would teach me right from wrong,
You help me grow up strong,
You wipe away all my tears,
I love you more with each New Year!!

A gentle wisdom, warm and bright,
You are my shining star, my guiding light!!

GUITARIANA BORAH
II-B

ROSE FLOWER



A red red rose flower
Bloom in spring .
My heart goes to you
When I smell you.
Happiness is then , when I pluck
You, your thorn teaches me about your
Nature. You are
Symbol of love and that's why.
I love you.
I love you.

Manvi Singh
III-B

A POEM OF LOVE FOR MY MOTHER ❀



In your eyes, I see my home,
A place where love forever grows.
Your gentle hands, your tender care,
Are blessings more than words can share.

You held my fears, you dried my tears,
You shaped my life through all the years.
Your voice, a soft and guiding light,
That leads me through my darkest night.

No treasure shines as bright or true
As the endless love I get from you.
If ever I am lost or far apart,
I carry you within my heart.

So here I stand, with love so deep,
A bond the world can never sweep.
For every joy and every bother—
My first, my forever friend… my mother.

ISHAAN LONGJAM
VI -A

POEM ON CONSERVATION OF TREES — "GUARDIANS OF GREEN"



Stand tall, O trees, in sun and breeze,
You whisper life through every leaf.
You cool the earth, you calm the air,
You fill our days with shade and peace.

Your roots hold strong the wounded land,
Your branches shelter bird and bee.
You gift us fruit, you gift us rain—
You are the lungs that keep us free.

But axes fall where forests stand,
And smoke now hides the morning skies.
The earth grows thirsty, tired, and weak,
As woodlands fade before our eyes.

So let us rise, protect our green,
Plant every seed with hope and care.
For when we guard each growing tree,
We guard our future—pure and fair.

ISHAAN LONGJAM
VI -A

A CHILD'S PRAYER



Thank you God for pretty flowers,
Thank you God for April shower,
Thank you God for the moon and sun,
Thank you God for everyone,
Thank you God for drink and food,
Thank you God for everything good,
Thank you God for this wonderful school,
And that you God that I am not a fool...

Prateeksha Devi
1- C



Travel experience

I went to a zoo called Nandan Kanan in Puri with my family. I saw a lot of animals there. I saw lions, tigers and monkeys. I also saw giraffes, zebras and hippos. I had a great time at the zoo . There we ate juice. We took a rickshaw there and enjoyed the zoo. Finally, we went back to the hotel after seeing the zoo.



Saikrish Das.
Class 1 C


संस्कृतम्

स्वाभिमानः – आत्मसम्मानस्य आधारः



आत्मनः प्रतिष्ठायै न हि परस्य सम्मानः।
स्वाभिमानमयं जीवनं यथार्थं सफलं भवति।

स्वाभिमानः जीवनस्य अत्यन्तं महत्वपूर्णं गुणः अस्ति। यः मनुष्यः स्वाभिमानवान् भवति, सः आत्मविश्वासपूर्णः, कर्तव्यनिष्ठः च भवति। स्वाभिमानः अहंकारः न, किन्तु आत्मसम्मानस्य प्रतीकः अस्ति। स्वाभिमानस्य अभावः आत्मविश्वासं नष्टयति, व्यक्तित्वं दुर्बलं करोति, च जीवनमध्ये अनेकानि संघर्षानि जनयति।

स्वाभिमानस्य मुख्यं लक्षणं आत्मविश्वासः अस्ति। यः स्वाभिमानवान् सः स्वस्य क्षमताः विश्वासपूर्वकं उपयोगयति। स्वाभिमानवान् व्यक्ति जीवनस्य प्रत्येके क्षेत्रे दृढः, संयमी च भवति। सः अपमानं सहनं न कुर्वन्, न्याययुक्तं मार्गं अनुसरति। स्वाभिमानः केवलं व्यक्तिगतं न, समाजे अपि आदरं वर्धयति। स्वाभिमानवान् शिक्षकः, छात्रः वा समाजस्य प्रत्येकः सदस्यः आदर्शः भवति।

स्वाभिमानस्य संरक्षणं प्रत्येकस्य कर्तव्यं। यः व्यक्ति स्वाभिमानं रक्षति, सः संघर्षेषु धैर्यं धरेत्, असफलतां साहसपूर्वकं स्वीकुर्यात्, च जीवनस्य प्रत्येकं अवसरं उपयोगयति। अहंकारः केवलं दुःखं, वैरं च जनयति, किन्तु स्वाभिमानः आत्मबलं, सम्मानं, च मानसिकशान्तिं प्रददाति। अतः स्वाभिमानस्य अभ्यासः जीवनस्य प्रत्येके क्षेत्रे आवश्यकः।

संक्षेपतः, स्वाभिमानः जीवनस्य दीपः, यः मार्गदर्शन, साहसं, आत्मसम्मानं च प्रददाति। प्रत्येकं मनुष्यं स्वाभिमानं रक्षतु, अहंकारं त्यजतु, च सदा सत्यं, धर्मं, च पुण्यं पथं अनुसरतु। स्वाभिमानं जीवनस्य आधारः अस्ति, यस्मात् यथार्थं आत्मविश्वासः, सम्मानः, च सफलता लभ्यते।

रातुल नाथ
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)

संस्कृत श्लोक और उनके अर्थ



1 श्लोक

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

छोटे दिल वाले लोग सोचते हैं – "यह मेरा, वह तुम्हारा।" बड़े दिल वाले लोग पूरी दुनिया को अपने परिवार की तरह मानते हैं।

सीख: सभी को अपना समझना और सीमित सोच से ऊपर उठना चाहिए।

2 श्लोक

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

हमारा केवल कर्म करने का अधिकार है, फल पर नहीं। सही कर्म करते रहो, फल की चिंता मत करो।

सीख: कर्म में लगाव, परिणाम में मोह नहीं।

3 श्लोक

सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
माकाश्चेदुःखभाग्भवेत्॥

सभी सुखी और रोगमुक्त हों। सभी अच्छी बातें देखें और किसी को दुःख न पहुँचे।

सीख: केवल अपने लिए नहीं, सबके लिए सोचो।

4 श्लोक

विद्यं चाविद्यं च यस्तद्वेदोभयंसहितम्।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥

जो व्यक्ति ज्ञान और अज्ञान दोनों को समझता है, वही विद्वान है। अज्ञान से मृत्यु और दुख होता है, ज्ञान से जीवन अमर और सुखमय बनता है।

सीख: ज्ञान ही जीवन का सबसे बड़ा साथी है।

5 श्लोक

क्षमा वीरस्य भूषणम्।

क्षमा किसी भी वीर का सबसे बड़ा गहना है। सच्ची वीरता केवल शारीरिक शक्ति में नहीं, बल्कि दूसरों की गलती माफ करने में भी है।

सीख: गुस्सा छोड़कर माफी देना असली शक्ति है।

6 श्लोक

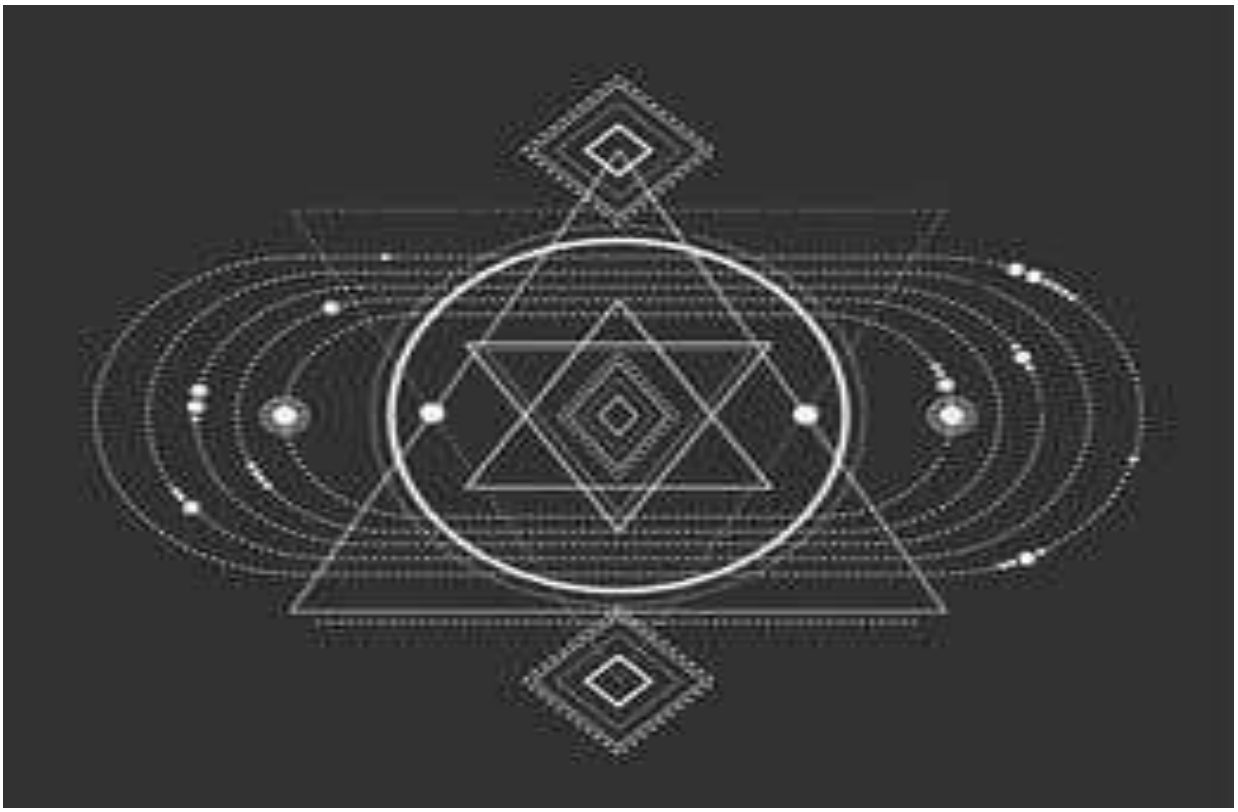
सहजं सुखं यः पश्यति सः परमो धर्मः।

जो व्यक्ति जीवन में सहज सुख और आनंद को समझता है, वही सच्चे धर्म को जानता है। धर्म केवल नियम या पूजा नहीं, बल्कि सरल जीवन और खुश रहना भी है।

सीख: सरल जीवन, सहज खुशी – यही असली धर्म है।

रुचि कुमारी

9-द



SCHOOL TOPPERS
2024-25
CLASS X



ANUPAMESH GUPTA
92.6



PRIYOM PROTIM BORAH
89.4



DEBANGA GOGOI
89.2

SCHOOL TOPPERS
2024 - 25
CLASS XII



JAPJOT SINGH
92.3
SCIENCE



BARNALI PATANGIA
90.4
COMMERCE



SNEHA KUMARI
87
HUMANITIES

SPORTS ACHIEVERS 2024-25





Activities in Primary Section






Turn off the tap Save
Save blue
Live green


Rotation
to turn
Revolution
shutterstock






SAVE WATER SAVE THE PLANET
CONSERVE WATER CONSERVE LIFE
"जब जल रहेगा तभी तो हमारा कल रहेगा"।

विद्यालय की गतिविधियां
Activities of the Vidyalaya








PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA
NO. 2. AFS TEZPUR
ENTREPRENEURS OF TOMORROW
COMMERCE EXHIBITION CUM MARKET PLACE
DIWALI MELA











उपायुक्त महोदय विद्यालय में..
DC SIR VISIT











वार्षिक शैक्षणिक पर्यवेक्षण
Annual Academic Inspection











विद्यालय की अन्य गतिविधियां
Activities of the Vidyalaya













अलंकरण समारोह
Investiture Ceremoney 2025-26










पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं॰२ तेजपुर
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 वायुसेना तेजपुर
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA No:2 AFS TEZPUR
AIR FORCE STATION, TEZPUR




पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं॰२ तेजपुर
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 वायुसेना तेजपुर
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA No:2 AFS TEZPUR
AIR FORCE STATION, TEZPUR

विद्यालय कला - सर्जन कोना
Art Corner of the Vidyalaya



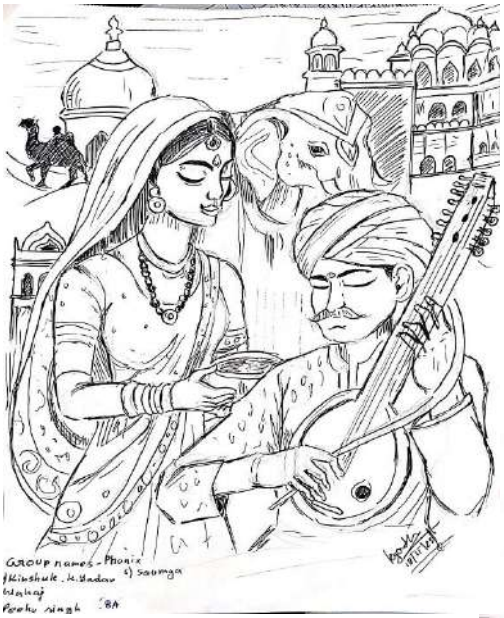





























वीर अब्दुल हमीद


पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं॰ २ तेजपूर
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 वायुसेना तेजपुर
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA No.-2 AFS TEZPUR
AIR FORCE STATION, TEZPUR

धन्यवाद

